खण्ड-ख

चन्दवरदायी : पद्मावती समय (प थ्वीराज रासो)

व्याख्या

[1]

पूरब दिस गढ़ गढ़न पति, समुद शिखर अति दुग्ग।
तहँ सु विजय सुरराज पति, जादू कलह अगम्य।। १।।
हसम हयग्गय देस गति, पति सायर म्रज्जाद।
प्रबल भूप सेवहिं सकल, धुनि निसान बहु साद।। २।।

शब्दार्थ :-

पूरब=पूर्व, दिस= दिशा, गढ़न पति=दुर्गों-किलों में श्रेष्ठ, अति=अत्याधिक, दुर्गम, दुग्ग=दुर्ग, समुद शिखर=नगर अथवा दुर्ग का नाम, सुरराज=देवों का राजा =इन्द्र, जादूकुलह=यादव वंश, अभग्ग=जिसे जीतना दुष्कर हो, दुर्जेय, हसम=सेना, हथग्गय=हाथी, घोड़े, सायर=सागर, म्रज्जाद=मर्यादा, धुनि=ध्वनि, निसान=नगाड़ा, साद=शब्द, बहु=अनेक, प्रबल=बहुत शक्तिशाली, भूप=राजा, सकल=सारे।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दरबदायी के 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उदद्य त हैं। कवि ने प्रथम दोहे में पद्मावती के पिता राजा विजयपाल के समुद्र शिखर दुर्ग तथा दूसरे में राजा के अपार वैभव का सुन्दर वर्णन किया है। यहीं से 'पद्मावती समय' की कथा आरम्भ होती है।

व्याख्या :-

कवि राजा विजयपाल के किले का वर्णन करता हुआ कहता है कि पूर्व दिशा में, सब दुर्गों का स्वामी समुद्र शिखर नाम का एक अत्यन्त विशाल दुर्ग है। वहाँ यादव वंश का, देवों का स्वामी इन्द्र के समान प्रतापी राजा विजयपाल अखण्ड रूप में राज्य करता था। उस राजा विजयपाल के देश में विशाल सेना थी जिसमें अगणित हाथी-घोड़े थे। अर्थात् विजयपाल के राज्य में विशाल अश्व सेना तथा गज सेना विद्यमान थी। वह सागर-पर्यन्त प थ्वी का स्वामी था अथवा उसकी कीर्ति समुद्र पर्यन्त समूची प थ्वी पर फैली हुई थी। बड़े-बड़े शक्तिशाली राजा उसके अधीन थे, उसकी सेना में रत रहते थे। विजयपाल की सेना के द्वारा जब नगाड़े बजाए जाते थे, तब उसकी भयंकर ध्वनि सभी दिशाओं में, धरती से अम्बर तक फैल जाती थी।

विशेष :-

(1) समुद्र शिखर तथा राजा विजयपाल कल्पित स्थान तथा कल्पित नाम है।

(2) राजा वियजपाल की विशाल सेना तथा अनेक राजाओं द्वारा उसकी सेवा के द्वारा कवि ने राजा के गरिमामय व्यक्तित्व को चित्रित किया गया है।

(3) सम्पन्न राजा का चित्रण है।

(4) भाषा सरल तथा बोध गम्य है।

(5) आकर्षक गेयता और लयात्मकता है।

(6) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(7) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(8) 'गढ़ गढ़न', 'हसम हथग्गय' में छेकानुप्रास अलंकार है।

(9) दोहा छन्द का प्रयोग है।

(10) वीर रस का आकर्षक परिपाक है।

[2]

धुनि निसान कहु साद नाद सुरपंथ बजत बिन।
दस हजार हय चढ़त हेम नग जटिल साज तिन।
गज असंख गजपतिय मुहर सेना तिय संखह।
इन नायक का घटी पिनाक घटमट रज रख्खह।
दस पुत्र पुत्रिय एक रूप रथ सुरंग उम्मर डमर।
भंडार लछिय अगनित पदम सो पदमसेन कुंवर सुघर।।३।।

शब्दार्थ :-

धुनि=आवाज, निसान=नगाड़े, नाद=घोष, सुरपंच=पंचम स्वर में, हय=घोड़े, हेम=सेना, नग=हीरे, साज=सजावट या वस्त्र, तिन=उसका, असंख=असंख्य, मुहर=सेना का अग्रभाग, तिय=तीन, संखह=संख्या, पिनाक=शिव-धनुष, धर=धरा-धरती, भर=पालन-पोषण, रज=राज्य, रख्खह=रक्षा करना, सुरंग=सुन्दर, उम्मट=वस्तत्र-अम्बर, लछिम=लक्ष्मी, धन=सम्पत्ति, पदम=सौ अरब रुपये की राशि, कुँवर=राजा, सुघर=सुन्दर।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदायी रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें राजा विजयपाल की सैन्य शक्ति, धन-सम्पत्ति तथा परिवार का वर्णन किया गया है।

व्याख्या :-

कवि राजा विजयपाल की सैन्य शक्ति और धन वैभव का गौरवपूर्ण वर्णन करते हुए कहता है कि राजा विजयपाल के समुद्र शिखर दुर्ग में जब नगाड़े बजते थे, तब उनका भयंकर नाद सभी दिशाओं में गूँज उठता था। प्रतिदिन वहाँ पंचम स्वर में भेरी नाद होता रहता था। राजा की सेना में दस हजार अश्वारोही सैनिक थे जिनके वस्त्र हीरे-मोतियों से जड़े हुए थे। राजा की सेना में असंख्य हाथी थे। गज सेना के जो योद्धा हाथियों पर सवार हो कर सेना की अग्रिम पंक्ति बनाते थे (मुहर) उनकी संख्या तीन शंख थी अथवा घुड़सवार सैनिकों की संख्या से गज सेना के सैनिकों की संख्या तिगुनी थी। विजयपाल एक शक्तिशाली सेनानायक था। उसके हाथ में सदा शिवजी के धनुष जैसा धनुष रहता था जिसके बल पर वह प थ्वी-भर के राजाओं को नियन्त्रित रखता था। उसके दस पुत्र और एक पुत्री सभी एक समान गुणवान थे। राजा विजयपाल के रथों की ध्वजाएँ, जब रथ चलते थे, तब आक्रोश में फहराती थीं। राजा के कोष में अनगिनत पदम् धन भरा हुआ था। वह पद्मसेनी नाम की स्त्री का पति था।

विशेष :-

(1) राजा विजयपाल की अश्वसेना, गजसेना तथा रथ सेना का चमत्कारिक वर्णन है।

(2) 'शंख' तथा 'पद्य' संख्या वाची शब्दों का प्रयोग प्राचीन काल में प्रायः होता था कवि ने भी इनका प्रयोग किया है। राजा के वैभव का चित्रण है।

(3) राजा की सन्तान तथा पत्नी का भी उल्लेख इस पद्य में हुआ है।

(4) पूरे पद में अतिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग हुआ है।

(5) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(6) आकर्षक गेयता और लयात्मकता है।

(7) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(8) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(9) 'रज रख्खह', 'पुत्र पुत्रिय' में छेकानुप्रास अलंकार है।

[3]

पदमसेन कुंवर, ता घर नारि सुजांन।
ता उर एक पुत्री प्रकट, मनहुँ कला ससिभन।।

शब्दार्थ :-

पदमसेन कुष्ट=पद्मसेन रानी, ता=उसके, सुजान=चतुर (सुन्दर), उर=गर्भ, ससिभान=चन्द्रमा के समान।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमे कवि ने प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का सुन्दर चित्रण किया है। यहाँ कवि राजा विजयपाल की रानी के गर्भ से उत्पन्न पद्मावती के बारे में सूचना देता हुआ आकर्षक तथ्य कहता है।

व्याख्या :-

महाप्रतापी राजा विजयपाल के घर में पद्मसेन नाम की एक चतुर रानी थी। उस रानी के गर्भ से चन्द्रमा की कला के समान सुन्दर एक पुत्री उत्पन्न हुई। भाव यह है कि रानी के गर्भ से उत्पन्न पुत्री चन्द्रकला के समान सुन्दर लग रही है। वह चन्द्रमा के समान प्रतिदिन रूप-सौन्दर्य में अद्वितीय होती जा रही है जैसे चांद पूर्णमासी तक बढ़ता रहता है।

विशेष :-

(1) 'ससिभान' शब्द विवेचनशील है। इसका संधि-विच्छेद करके (ससि+भान) चन्द्रमा और सूर्य अर्थ निकलते हैं। तब इसका अर्थ होगा - चन्द्रमा के समान सुन्दर और सूर्य के समान तेजस्वी। यही अर्थ तर्कसंगत प्रतीत होता है। यह शब्द अगले पद्य में भी प्रस्तुत हुआ है।

(2) 'पुत्री प्रकट' में छेकानुप्रास अलंकार है।

(3) 'मनहुँ कला ससिभान' में उत्प्रेक्षा अलंकार का सुंदर एवं स्वाभाविक प्रयोग है।

(4) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(5) भावानुकूल शब्द चयन है।

(6) दोहा-छन्द का सफल प्रयोग है।

(7) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(8) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(9) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(10) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(11) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(12) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

[4]

मनहुं कला ससिमान, कला सोलह सो बन्निय।
बाल बेस ससि ता समीप, अम्रित रस पिन्निय।।
बिगसि कमल म्रिग भ्रमर, बैन षंजन म ग लुट्टिय।
हरि कीट अरु बिम्ब, मोति नष सिष अहिघट्टिय।।
छप्पति गयन्द हरि हंस गति, बिह बनाय संचै सचिय।
पदमिनिय रूप पदमावतिय, मनहुं काम कामिनि रचिय।।

शब्दार्थ :-

मनहुं=मानो, ससिमान=चांद के समान, सो=से, बन्निय=बनाई गई, बेस=आयु (अवस्था अर्थात् बाल्यावस्था), ससि=चांद, अंम्रित=अम त, ता=उसके, पिन्निय=पी रहा हो, बिगसि=बिगसित, म ग=हिरन, बैन=बाणी, षंजन=खंजन नाम का पक्षी, लुट्टिय=लूट लिया हो, हरि=हीर, कीट=तोता, बिम्ब=बिम्बा फल, नष सिष=नख-शिख, अहिघुट्टिय=बनाया गया (अभिघटित), छप्पति=छिप जाते हैं, गयन्द=हाथी, हरि=सिंह, गति=चाल, बिह=विधाता, (विधि), संचै=सांचा, सचिय=इन्द्र की पत्नी शचि (इन्द्राणी), पद्मिनिय=पद्मिनि का, काम कामिनि=कामदेव की पत्नी (रति), रचिय=बनाया गया।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदायी रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्ध त हैं। इसमें कवि ने प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का सुन्दर वर्णन किया है। यहां कवि चन्दबरदायी विभिन्न प्रकार के उपमानों द्वारा पद्मावती के अद्वितीय सौन्दर्य तथा नख-शिख का परम्परागत रूप में वर्णन करता है।

व्याख्या :-

कवि अपनी अद्भुत कल्पना के आधार पर कहता है कि उसे देख कर लगता है कि मानो वह चन्द्रमा की कला है। ऐसा प्रतीत होता है मानो चन्द्रमा की सोलह कलाओं द्वारा उसे बनाया गया है। भाव यह है कि वह चन्द्रमा के समान सुन्दर है। वह अभी बाल्यावस्था में ही है। उसके अद्वितीय सौन्दर्य को देख कर ऐसा प्रतीत होता है, मानो चन्द्रमा उसके पास आकर उसके सौन्दर्य रूपी अम त का पान कर रहा है। कवि के कहने का अभिप्राय है कि उसका सौन्दर्य चन्द्रमा के समान मन और आंखों को सुख और शान्ति देता है।

कवि उसके नख-शिख का वर्णन करते हुए पुनः कहता है कि उसके मुख, नेत्र, हाथ और चरण आदि सुन्दर अंगों ने विकसित कमल, भ्रमर वेणु तथा खंजन पक्षी के सौन्दर्य को भी लूट लिया है, अर्थात् पद्मावती के शरीर की सुगन्ध ने कमलों की सुगंध को क्षीण कर दिया है,

नेत्रों ने हिरणों की मोटी आंखों को जीत लिया है, उसके लम्बे बालों ने भ्रमरों का मान मर्दन कर दिया है, उसके मधुर स्वर की माधुरी ने मुरली की मधुरता को पराजित कर दिया है तथा नेत्रों की बाल सुलभ चंचलता ने खंजन पक्षी की चंचलता को भी पराजित कर दिया है। भाव यह है कि पद्मावती के अंग-प्रत्यंग इतने सुन्दर हैं कि उसके समक्ष सभी उपमान फीके पड़ जाते हैं। ऐसा लगता है मानो पद्मावती के अंगों ने इन परम्परागत उपमानों की सुन्दरता को छीनकर अपने ऊपर धारण कर लिया है जिसके फलस्वरूप यह उपमान फीके पड़ गये हैं।

पद्मावती परम सुन्दरी है। नख से लेकर शिख तक पद्मावती का समूचा सौन्दर्य, हीरा, शुक, बिम्ब, फल तथा मोतियों द्वारा निर्मित हुआ है, अर्थात् पद्मावती का गौर वर्ण हीरे के समान सुशोभित हो रहा है। उसकी नासिका को देखकर तोते की चोंच का भ्रम होता है। उसके अधर लाल बिम्ब फल के समान सुशोभित हो रहे हैं। उसके हाथ-पैर की अंगुलियों के नख मोती के समान कांतिमान हैं।

पुनः कवि पद्मावती की मन्द मन्थर गति का आकर्षण वर्णन करते हुए कहता है कि उसकी सुन्दर गति को देखकर हाथी, सिंह और हंस पराजित होकर छिप जाते हैं। भाव यह है कि उसकी गति में हाथी जैसी मस्ती, सिंह जैसा गर्व और हंस जैसी मन्थरता है, परन्तु पद्मावती की गति में अधिक मस्ती, गर्द तथा मन्थरता है इसलिए उसकी गति देखकर ये तीनों प्राणी लज्जित होकर छिप जाते हैं। पद्मावती का समूचा शरीर सुगठित एवं सुडौल है। ऐसा लगता है मानो विधाता ने उसे सांचे में ढालकर बनाया है। यदि यहां सच्चिय का अर्थ शचि लगाएं तो उसका अर्थ होगा-विधाता ने उसे उसी ढांचे में ढाल कर बनाया है जिसमें उसने इन्द्र की पत्नी शचि को बनाया था। भाव यह है कि पद्मावती का शरीर शचि के समान सुन्दर एवं सुगठित है। उस पद्मावती का रूप पद्मिनी नारी के समान सुन्दन एवं आकर्षक है। उसके रूप को देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो विधाता ने एक दूसरी कामदेव की पत्नी रति को बना दिया है अर्थात् पद्मावती इन्द्र की पत्नी शचि और कामदेव की पत्नी रति के समान अप्रतिम सुन्दरी है।

विशेष :-

(1) पद्मावती का रूप वर्णन परम्परागत रूप से किया गया है। सभी उपमान परम्परागत हैं। परवर्ती कवियों ने भी इसी परम्परा का निर्वाह किया है।

(2) प्रस्तुत पद्य में हमें कुछ पाठान्तर भी मिलते हैं। तीसरी पंक्ति में म ग के स्थान पर 'स्त्रिग' शब्द का प्रयोग हुआ है। अतः स्त्रिग का अर्थ है-कमलों की पंक्ति के समान सुन्दर। यहाँ म ग शब्द का प्रयोग नहीं हो सकता क्योंकि आगे चलकर म ग (हिरण) शब्द का प्रयोग हुआ है। अतः पहला शब्द म ग (हिरण) नहीं हो सकता।

(3) इस प्रकार छप्पति शब्द को 'छत्रपति' पाठान्तर स्वीकार कर लेने पर अर्थ की संगति भंग हो जाती है क्योंकि छत्रपति का अर्थ 'राजा' होता है। छप्पति का अर्थ यहाँ पर है'-छिप जाते है' यही पाठ शुद्ध माना जायेगा।

(4) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(5) कवित्त छन्द है।

(6) सरल बोधगम्य शब्दों का उत्तम चयन है।

(7) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(8) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(9) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(10) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(11) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(12) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(13) 'मनहुं कला ससिभान', 'मनहुं काम कामिनि रचिय' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(14) 'बाल बेस', 'हरि हंस' में छेकानुप्रास अलंकार है।

(15) पूरे पद में अतिशयोक्ति अलंकार है।

[5]

मनहुं काम कामिनी रचिय, रचिय रूप की रास।
पसु पंछी सब मोहिनी, सुर, नर, मुनियर पास।।

शब्दार्थ :-

मनहुं=मानो, काम कामिनी=कामदेव की पत्नी (रति), रचित्त=बनाई, रास=राशि (समूह), मुनियर=मुनिवर (श्रेष्ठ मुनि), सुर=देवता, पास=पाश (बंधन)।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदायी रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें कवि ने प थ्वीराज और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का सुन्दर वर्णन किया है। यहां कवि पद्मावती के रूप-सौन्दर्य का मनोहारी वर्णन करता है और उसके प्रभाव की चर्चा करता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि पद्मावती का रूप देखकर ऐसा लगता है मानो विधाता ने रूप की राशि, कामदेव की पत्नी 'रति' को अपने समक्ष रखकर पुनः पद्मावती की रचना की है। कहने का भाव है कि पद्मावती रति के समान ही अनिन्ध सुन्दरी है। मानो विधाता ने पद्मावती के रूप में एक अन्य रति का निर्माण कर दिया है। उसका रूप सौन्दर्य इतना आकर्षक है कि वह पशु-पक्षियों को भी मोहित कर लेता है। पशु-पक्षियों की तो क्या चर्चा, देवता, मनुष्य और श्रेष्ठ मुनि भी उसके सौन्दर्य जाल में बंध जाते हैं। भाव यह है कि ये सभी उसके रूप-सौन्दर्य के फंदे में पड़कर आसक्त हो जाते हैं। इस प्रकार पद्मावती परम् सुन्दरी है।

विशेष :-

(1) पशु-पक्षी, मनुष्य, देवता आदि सभी पद्मावती के सौन्दर्य को देखकर आसक्त हो जाते हैं।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) श्रंगार-रस का परिपाक है।

(4) दोहा-छन्द का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

(5) माधुर्य प्रसाद गुण सम्पन्न शैली है।

(6) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(7) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(8) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(9) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(10) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(11) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(12) 'मनहुं काम कामिनि रचिय' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(13) 'रचिय रूप', 'पसु पंछी' में छेकानुप्रास अलंकार है।

[6]

सामुद्रिक लच्छन सकल, चौसठि कला सुजान।
जानि चतुरदस अंग षट, रति बसन्त परमान।।

शब्दार्थ :-

सामुद्रिक=एक विशेष प्रकार का शस्त्र जिससे मनुष्य के विभिन्न शारीरिक अंगों की बनावट का वर्णन रहता है और उसी आधार पर उसके शरीर तथा भविष्य आदि के बारे में बताया जाता है। लच्छन=लक्षण, चौसठि कला=चौसठ कलाएं (भारतीय आचार्यों ने कलाओं की संख्या चौसठ मानी है, जैसे न त्य, गीत, वाद्य आदि), सुजान=निपुण (चतुर), जानि=जानती है। चतुरदस=चौदह विद्याएं, अंगषट=वेद छः अंग (षटदर्शन), परमान=प्रमाण।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदायी रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌घ त हैं। इसमें प थ्वीराज और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का वर्णन किया गया है। यहां कवि राजा विजय की पुत्री तथा अनिन्ध राजकुमारी पद्मावती के सामुद्रिक गुणों की चर्चा करता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई पद्मावती के शारीरिक सौष्ठव का वर्णन करते हुए कहता है कि पद्मावती के शारीरिक अंगों में सभी मंगलकारी सामुद्रिक लक्षण विद्यमान हैं। वह चौसठ कलाओं में पारंगत है, कुशल है। इसके साथ-साथ वह चौदह विद्याओं की पूर्ण ज्ञाता है तथा वेदों के छह अंगों या षट्-दर्शन की ज्ञाता है। भाव यह है कि उस राजकुमारी ने सभी विद्याओं, वेद-वेदांगों तथा सभी दर्शन का ज्ञान भी प्राप्त कर रखा था। वह रति के समान सुन्दरी है तथा बसन्त के समान पूर्ण यौवना है अर्थात् जिस प्रकार बसन्त के आगमन से प्राकृतिक सौन्दर्य खिल उठता है, उसी प्रकार यौवन के आगमन से पद्मावती के सभी अंग प्रत्यंग सौन्दर्य के कारण सुशोभित हो रहे हैं। इस प्रकार पद्मावती के रूप सौन्दर्य का आकर्षक चित्रण किया है।

विशेष :-

(1) पद्मावती के रूप, गुण आदि का प्रभावशाली चित्रण किया है।

(2) सुन्दर नारी के सभी शुभ लक्षण पद्मावती में विद्यमान हैं।

(3) वेदों के छह अंग (वेदांग) - शिक्षा, कल्प, व्याकरण, रिक्ता, ज्योतिष तथा छन्द भी सामने आये हैं।

(4) षट्-दर्शन-सांख्य, योग, न्यास, वैशेषिक, मीमांसा तथा वेदान्त का वर्णन है।

(5) डिंगल-पिंगल मिश्रित भाषा का सफल प्रयोग है।

(6) दोहा छन्द का सफल प्रयोग है।

(7) श्रंगार-रस का सुन्दर परिपाक है।

(8) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(9) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(10) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(11) आकर्षक गेयता और लयात्मकता है।

(12) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(13) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(14) पूरे दोहे में उपमा अलंकार है।

[7]

सखियन संग खेलत फिरत, महलनि बाग-निवास।
कीट इक्क दिष्यिय नयन, तब मन भयौ हुलास।।

शब्दार्थ :-

सखियन=सखियां, संग=साथ, बाग=निवास, उद्यान का महल, कीट=तोता, इक्क=एक, द्विष्यिय=दिखाई दिया, नयन=आंखों से, हुलास=प्रसन्न, आनन्दित, भयो=हुआ।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्द्य त हैं। इसमें कवि ने प थ्वीराज और पद्मावती के प्रेम और विवाह का वर्णन किया है। यहां कवि उस समय का वर्णन करता है जब पद्मावती अपने महल के बाग में सखियों के साथ क्रीड़ा करती हुई एक तोते को गम्भीरता से देखती है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि पद्मावती अपनी सखियों के साथ मिलकर अपने महल के उद्यान में अथवा उद्यान में स्थित महल में खेल रही थी। एक दिन उसे एक तोता दिखाई दिया। उसे देखकर उसका मन प्रसन्नता से भर गया, अर्थात् उसका मन अत्यधिक उल्लसित हो गया। इस प्रकार पद्मावती का मन मयूर हो गया है।

विशेष :-

(1) वर्णनात्मक शैली अपनाई गई है।

(2) पद्मावती की आकर्षक क्रीडाओं का सौन्दर्यपूर्ण वर्णन किया गया है।

(3) डिंगल, पिंगल भाषा का मिश्रित रूप है।

(4) दोहा-छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता और लयात्मकता है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(10) 'सखियन संग' में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

[8]

मन अति भयौ हुलास, बिगसि जनु कोक किरन रवि।
अरुन अधर लिय सधर, बिम्बफल जानि कीट छबि।।
यह चाहत चष चकित, उह जु तक्किय झरप्पि झर।
चंच चहुट्टिय लोभ, लियौ तब गहित अप्प कर।।
हरषत अनन्द मन महिं हुलास, लै जु महल भीतर गई।
पंजर अनूप जग मनि जटित, सौ तिहिं महं रष्षत भई।।

शब्दार्थ :-

अति=बहुत, बिगसि=विकसित (खिला हुआ), हुलास=प्रसन्न (प्रफुल्लित होना), जनु=मानो, कोक=चकवा नाम का पक्षी (कमल), अरुन=लाल, अधर=नीचे का ओष्ठ, तिय=सुन्दर नारी, सघर=ऊपर का ओठ, बिम्ब फल=बिम्ब नाम का एक विशेष फल, कीट=तोता, छबि=शोभा, चाहत=देख रही थी, चष=चक्षु, उह=उसने, तक्किय=देखकर (ताककर), झरप्पि=झप्पटा मारकर (छपट कर), झर=तत्कार चंच=चोंच, चहुट्टिय=चिपक गया, अप्प=अपने, गहित=पकड़ लिया, कर=हाथ, हरषत=प्रसन्न, अनन्द=आनन्द, महिं,=में, पंजर=पिंजरा, अनूप=सुन्दर, नग=रत्न, जटित=जड़ा हुआ, तिहिं महं=उसमें, रष्षत भई=रख लिया।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'पृथ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्धृत हैं। इसमें कविवर चन्दबरदाई ने पद्मावती और पृथ्वीराज चौहान की प्रेम-कथा का मनोहारी वर्णन किया है। यहां उस समय का वर्णन है जब पद्मावती ने तोते को देखा तो वह अत्यधिक आनन्दित और उत्साहित हो जाती है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मन भावन चित्रण करता हुआ कहता है कि उस शुक अर्थात् तोते को देखकर पद्मावती का मन अत्यधिक आनन्दित हो उठा। उस तोते को देखकर पद्मावती इस प्रकार प्रफुल्लित (आनन्दित) हो उठी जिस प्रकार सूर्य की प्रथम किरण को देखकर चकवा पक्षी आनन्दित हो उठता है। यहां कवि ने एक सुप्रसिद्ध कवि समय की ओर संकेत किया है जिस प्रकार रात्रि होने पर चकवा चकवी से अलग हो जाता है, लेकिन प्रभात होने पर चकवी से पुनः मिलने की आशा में उसका मन उत्साहित हो उठता है। अतः कवि यहां स्पष्ट करना चाहता है कि शुक को देखकर पद्मावती का मन भी प्रफुल्लित हो उठा।

यहां कोक का अर्थ कमल भी लगाया जा सकता है। तदनुसार हम इसका अर्थ करेंगे-जिस प्रकार सूर्य की पहली किरण का स्पर्श पाकर कमल खिल जाता है उसी प्रकार से पद्मावती उस शुक को देखकर प्रसन्न हो गई। उस शुक ने सुन्दर पद्मावती के ऊपर और नीचे लाल रंग के दोनों ओठों को लाल कान्ति के कारण बिम्ब फल समझ लिया अर्थात् तोता पद्मावती के लाल होठों को बिम्ब फूल समझकर उस पर लुभा गया। इधर पद्मावती भी आश्चर्यचकित नेत्रों से उस तोते की तरफ देख रही थी, परन्तु उधर बिम्ब फल खाने के लालच में तोते ने पद्मावती के लाल होठों पर झप्पटा मारा और अपनी चोंच से पकड़ कर चिपक गया। तब पद्मावती ने अपना हाथ आगे बढ़ाकर शुक को पकड़ लिया। तोते को पकड़कर वह बड़ी प्रसन्न हुई और मन में आनन्दित हो उठी। प्रसन्नतापूर्वक वह उसे अपने महल में ले गई। वहां महल में रत्न और मणियों से जड़ा एक सुन्दर पिंजरा था। उसी पिंजरे में पद्मावती ने तोते को बन्द कर लिया। इस प्रकार पद्मावती की गतिविधियों का मोहक चित्रण किया गया है।

विशेष :-

(1) पद्मावती और शुक की गतिविधियों का आकर्षक चित्रण है।

(2) चकवे के 'कवि समय' का सुन्दर प्रयोग है।

(3) अधरों को बिम्बाफल कहना और उन पर तोते का झप्पटना आदि परम्परागत नख-शिख श्रंगार वर्णन है।

(4) डिंगल, पिंगल भाषा का मिश्रित रूप है।

(5) श्रंगार रस का सुन्दर प्रयोग है।

(6) कवित्त छन्द का प्रयोग है।

(7) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(8) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(9) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(10) आकर्षक गेयता और लयात्मकता है।

(11) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(12) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(13) 'अरुन अधर', 'झरप्पि झर', 'चंच चहुट्टिय', 'मन महिं' में छेकानुप्रास अलंकार है।

(14) 'चाहत चष चकित' में व त्यानुप्रास अलंकार है।

[9]

तिहि महल रष्यत भइय, गइय बेल सब भुल्ल।
चित्त चहूंट्टयौ कीट सों, राम पढ़ावत फुल्ल।।

शब्दार्थ :-

तिहि-उस, रष्यत=रखती, बेल=खेल, भुल्ल=भूल गई, चित्त=मन, चिहूंट्टयौ=रम गया (चिपक गया), कीट=तोता, फुल्ल=प्रसन्न होकर (प्रफुल्लित होकर), पढ़ावत=पढाती है (पढ़ाता है)।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्द्य त हैं। इसमें प थ्वीराज और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का वर्णन है। यहां कवि स्पष्ट करता है कि पद्मावती उस तोते के साथ इतना अधिक प्रेम करने लगी कि वह अपना खेल-कूद भी भूल गई।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि पद्मावती ने उस तोते को अपने महल में रख लिया। तोते के साथ उसका मन इतना अधिक रम गया कि वह अपने खेल-कूद आदि को भी भूल गई। तोते के प्रति उसके मन में अत्यधिक मोह-भाव पैदा हो गई और वह आनन्दित (प्रफुल्लित) मन से उसे राम-राम का पाठ पढ़ाने लगी। कहने का भाव यह है कि पद्मावती का मन तोते के प्रति इतना अधिक आसक्त हो गया कि वह अपनी खेलकूद की क्रीड़ाओं को छोड़कर उस तोते में रम गई। इस प्रकार पद्मावती और तोते की गतिविधियों का मोहक चित्रण है।

विशेष :-

(1) पद्मावती के अनुराग का सुन्दर वर्णन है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) दोहा-छन्द का सफल प्रयोग है।

(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(5) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(7) आकर्षक गेयता और लयात्मकता है।

(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(10) 'चित्त चहूट्टयौ' में छेकानुप्रास है।

[10]

कीट कुंवरि तन निरषि दिषि, नष सिष लौ यह रूप।
करता करी बनाय कै, यह पद्मिनि सरूप।।

शब्दार्थ :-

कीर=तोता, कुंवरि=राजकुमारी, तन=शरीर, निरषि=देखकर, दिषि=दिशा, नष=नख, सिष=शिखा, लौ=तक, करता=विधाता (ईश्वर), करी=किया, बनाय कै=बनाकर, सरुप=सुन्दर रूप।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्द्य त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान तथा पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। तोता पद्मावती के अपूर्व सौन्दर्य को देखकर मन ही मन बड़ा प्रसन्न हुआ। इस स्थिति का वर्णन अत्यन्त मनभावन है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि तोते ने राजकुमारी के शरीर की तरफ देखा और नख से लेकर शिख तक पैर के अंगूठे के नाखून से लेकर सिर की चोटी तक उसके रूप सौन्दर्य पर द ष्टिपात किया। वह मन ही मन सोचने लगा कि विधाता अर्थात् ईश्वर ने पद्मावती के सुन्दर रूप का निर्माण किया है। कहने का भाव यह है कि तोता पद्मावती के सुन्दर रूप को देखकर सोचने लगा कि विधाता ने बड़ी रुचि के साथ इस पद्मावती के शरीर का गठन किया है।

विशेष :-

(1) तोता पक्षी होकर भी पद्मावती के रूप-सौन्दर्य से विशेष प्रभावित है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) दोहा छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(5) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(7) आकर्षक गेयता और लयात्मकता है।

(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(10) 'कीट कुंवारे', 'करता करी' में छेकानुप्रास अलंकार है।

[11]

कुट्टिल केश सुदेश, पौहप रचियत पिक्क सद।
कमलगंध वयसंध, हंसगति चलत मन्द-मद।।
सेत वस्त्र सोहै सरीर, नष स्वांति बुन्द जस।
भमर भंवहि भुल्लहिं सुभाव, मकरन्द बास रस।।
नैन निरखि सुष पाय सुक, यह सुदिन मूरति रचिय।
उमा प्रसाद हर हेरियत, मिलहिं राज प्रथिराज जिय।।

शब्दार्थ :-

कुट्टिल=कुटिल, घुंघराले, केश=बाल, सुदेश=सुन्दर, पौहप=पुष्प, रचित=रचित, पिक्क=पिक-कायल, सद=शब्द-वाणी, कमलगन्ध=कमलगन्धा नारी जिसके शरीर से कमल की सुगन्ध आती है। वयसंघ=वयः सन्धि (किशोरावस्था और यौवनावस्था के मिलने की अवस्था, जिसमें इन दोनों अवस्थाओं के आंशिक लक्षण मिलते हैं), मद=मदभरी-मस्तीभरी, सेत=श्वेत-सफेद, नष=नख-नाखून, स्वांति बुन्द=स्वाति जल की बूंद-मोती, जस=समान-जैसी, भवहिं=घूमते-चक्कर काटते, भुल्लहि=भूलकर, सुभाव=प्रेम में अनुरक्त होकर, बास=सुगन्ध, सुष=सुख, सुदिन=शुभ दिन, रचिय=रची-बनाई, उमा=पार्वती, प्रसाद=कृपा, हेरियत=देखता है, जिय=मन।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्द्य त हैं। पद्मावती समय में प थ्वीराज चौहान तथा पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का सुन्दर वर्णन है। यहां कवि नख-शिख पद्धति का पालन करता हुआ पद्मावती के रूप-सौन्दर्य का आकर्षक वर्णन करता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई शुक अर्थात् तोते के माध्यम से पद्मावती के मनभावन अप्रतिम रूप सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहता है कि उसके काले बाल घुंघराले और और सुन्दर हैं, जिसमें सुन्दर फूल गूंथे हुए हैं। भाव यह है कि उसने फूलों की वेणी धारण कर रखी है। उसकी वाणी कायेल के समान मधुर और सुरीली है। ऐसी पद्मावती कमलगंधा है अर्थात् उसके शरीर से कमलों की सुगन्ध आती है, इसलिए उसे पद्मावती कहा गया है। उसकी आयु वयः सन्धि की आयु है, अर्थात् न अभी उसमें पूर्ण यौवन का आगमन हुआ है और न ही बचपन समाप्त हुआ है, अर्थात् वह किशोरावस्था और यौवनावस्था के मध्य है। वह हंस की गति के समान मन्थर गति से चलती है। उसके शरीर पर श्वेत वस्त्र सुशोभित हो रहे हैं। ऐसा लगता है कि मानो उसके वस्त्र स्वाती नक्षत्र की बूंद अथवा मोती के समान उज्ज्वल और सुन्दर हैं। उसके शरीर से उत्पन्न होने वाली सुगन्ध का पान करने के लिए भवंरे अपने चंचल स्वभाव को भूलकर उसी के चारों ओर मंडराते रहते हैं; अर्थात् चक्कर लगाते रहते हैं। भौरों का चंचल स्वभाव होता है। वे किसी एक फूल पर टिक कर नहीं बैठते, बल्कि भिन्न-भिन्न फूलों का रसपान करते हैं, परन्तु आज वे चंचलता को भूलकर पद्मावती के शरीर के इर्द-गिर्द चक्कर काट रहे हैं।

परम सुन्दरी पद्मावती के ऐसे अद्वितीय सौन्दर्य को देखकर तोते को अत्यधिक सुख की प्राप्ति हुई है। वह सोचने लगा कि विधाता ने कोई सुन्दर घड़ी और दिन देखकर ही पद्मावती के सुन्दर शरीर की रचना की है। यह सोचकर मन ही मन वह पार्वती की वन्दना करके शिव की ओर इस आशा से देखने लगा कि यदि शिव पार्वती की कृपा हो जाये तो यह पद्मावती प थ्वीराज को प्राप्त हो जाएगी। अतः वह मन ही मन शिव और पार्वती से पद्मावती और प थ्वीराज के विवाह के लिए स्तुति करने लगा। कितना मनभावन संदर्भ है कि तोता गुरु की तरह पथ-प्रदर्शक ही नहीं पथ-निर्माता बन गया है।

विशेष :-

(1) पद्मावती के सौन्दर्य का नख-शिख रूप में वर्णन है।

(2) 'उमा-प्रसाद' शब्द प्रयोग विशेष अभिप्राय से किया है। हिन्दू जाति की युवतियां मनचाहा वर प्राप्त करने के लिए पार्वती की पूजा करती हैं। पार्वती जी प्रसन्न होकर उन युवतियों की मनोकामना को पूरा करने के लिए शिव को प्रेरित करती हैं।

(3) डिंगल, पिंगल मिश्रित-भाषा का आकर्षक रूप है।

(4) श्रंगार-रस का सुन्दर परिपाक है।

(5) कवित-छंद का सुन्दर प्रयोग है।

(6) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(7) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(8) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(9) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(10) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(11) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(12) 'कुट्टिल केश', 'सौहै सरीर', 'नैन निरखि', 'हर हेरियत' में छेकानुप्रास अलंकार है।

(13) 'मन्द-मद' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

(14) भमर भंवहि भुल्लहि' में व त्यानुप्रास अलंकार है।

[12]

सूक समीप मन कुंवरि कौ, लग्यौ बचन कै हेत।
अति विचित्र पंडित सुआ, कथत जु कथा अमेत।।

शब्दार्थ :-

सूक=शुक (तोता), कुंवरि=राजकुमारी, लग्यौ=लग गया, बचन=बात, कै हेत=के लिए (हेतु), पंडित=विद्वान, सुआ=तोता, कथत=कथन, कथा=कहानी, अमेत=बहुत सी।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का वर्णन है। यहां कवि तोते के गुण और स्वभाव का वर्णन करता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई तोते के मनभावन गुणों का चित्रण करते हुए कहते हैं कि उस तोते के

पास रहते हुए पद्मावती का मन उसकी बातों में लग गया। अर्थात् राजकुमारी पद्मावती उस शुक के प्रति इतनी आकर्षित हो गई कि उसका मन तोते की बातें सुनने में लगा रहता था। उधर वह तोता भी बड़ा विचित्र विद्वान था अर्थात् उसके पास ज्ञान का भण्डार था। वह राजकुमारी पद्मावती को अनेक प्रकार की कहानियाँ (कथाएँ) सुनाता रहता था अर्थात् पद्मावती तोते से असंख्य कहानियाँ सुनती रहती थी। इन कहानियों से पद्मावती का मन आनन्द से परिपूर्ण हो जाता था।

विशेष :-

(1) तोते की विद्वता पर प्रकाश डाला गया है। उस तोते के पास असंख्य कथाओं का भण्डार था जिसे वह राजकुमारी को सुनाता रहता था।

(2) दोहा-छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(3) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(4) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(5) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(6) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(7) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(8) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(9) 'सूक समीप' में छेकानुप्रास अलंकार है।

[13]

पुच्छत बचन सुबाले, उच्चरिय कीट सच्च सच्चाये।
कवन नाम तुव देस, कवन चन्द करै परवेस।।

शब्दार्थ :-

पुच्छत=पूछती है, बचन=बात, सुबाले=सुन्दर बाला (श्रेष्ठ नारी), उच्चरिय=बाताओ, कीट=तोता, सच्च सच्चाये=सच सच, कबन=कौन-सा, तुप=तुम्हारा, देस=देश, चन्द=इन्द्र (राजा), परवेस=राज्य।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌घ त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहां कवि उस समय का चित्रण करता है जब पद्मावती उस तोते से उसका पूरा परिचय पूछती है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि वह श्रेष्ठ नारी पद्मावती उस तोते से यह बात पूछने लगी और कहने लगी-हे तोते ! तुम मुझे सच-सच बताओ, तुम्हारा नाम क्या है ? और तुम्हारा देश कौन सा है ? अर्थात् तुम किस देश के रहने वाले हो ? साथ ही तुम यह भी बताओ कि तुम्हारे देश में कौन राजा राज्य करता है ? अर्थात् उस राजा का क्या नाम है ?

विशेष :-

(1) संवादों का आकर्षक प्रयोग कर पद्मावती के कथन को नाटकीय बना दिया है।

(2) गाथा छन्द का सफल प्रयोग किया है। यह छन्द प्राकृत भाषा का सर्वाधिक प्रिय और

प्रमुख छन्द था। अक्सर कवि लोग कथा वर्णन में ही इसका प्रयोग करते थे। कवि चन्द ने भी गाथा छन्द का सफल प्रयोग किया है।

(3) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(4) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(5) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(6) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(7) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(8) 'सच्च सच्चाये' में पुनरुक्ति अलंकार है।

[14]

उच्चरिय कीट सुनि बचनं, हिन्दबान दिल्ली गढ़ अयनं।
तहां चन्द अवतार चहुंवान, तहं पृथिराज सूर सुभारं।।

शब्दार्थ :-

उच्चरिय=बोला, कीट=तोता, बचनं=वचन, हिन्दबान=हिन्दुस्तान, गढ़=किला, अयनं=स्थान (नगर),तहां=वहां, चन्द=इन्द्र (राजा), तहं=वह, चजुंवानं=चौहान वंश, पृथिराज=पृथ्वीराज, सूर=शूरवीर, सुभारं=भारी (बलवान)।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'पृथ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्धृत हैं। इसमें पृथ्वीराज चौहान तथा पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का वर्णन है। यहां कवि पद्मावती और तोते के आकर्षक वार्तालाप का वर्णन करता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि पद्मावती के वचनों को सुनकर तोता पद्मावती से कहने लगा कि हिन्दुस्तान में दिल्ली गढ़ का नाम एक नगर (स्थान) है। वहां पर इन्द्र का अवतार चौहान वंश में उत्पन्न अत्यधिक शूरवीर और बलवान राजा पृथ्वीराज है। यहां तोते ने पद्मावती को पृथ्वीराज चौहान का परिचय दिया और बताया कि वह दिल्ली का राजा था। उसका जन्म चौहान वंश में हुआ और वह बड़ा शूरवीर था। इस प्रकार चौहान वंश की गौरवता के साथ पृथ्वीराज की शूरवीरता का चित्रण किया गया है।

विशेष :-

(1) पृथ्वीराज की शूरवीरता और उसके वंश का परिचय दिया गया है।

(2) गाथा छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(3) डिंगल पिंगल भाषा का मिश्रित प्रयोग है।

(4) पाठान्तर - दूसरी पंक्ति में सुमारं के स्थान पर संभारम् शब्द भी मिलता है। सुभानम का अर्थ है -'सूर्य' के समान तेजस्वी' अर्थात् पृथ्वीराज सूर्य के समान तेजस्वी था।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(9) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(11) 'सूर सुभारं' में छेकानुप्रास है।

[15]

पयामावतिहि कुंवर संघत, दुज कथा कहत सुनि सुनि सुवत।
हिन्दवान थान उत्तम सुदेस, तहं उदत दुग्ग दिल्ली सुदेस।।

शब्दार्थ :-

पयामावतिजि=पदमावती के पास, कुंवर=राजकुमार, संघत=सात, दुज=द्विज (पक्षी), सुंक्त=सुन्दर कथा, हिन्दवान=हिन्दुस्तान, थान=स्थान, सुदेस=अच्छा देश, उदत=उदित (प्रकट), दुग्ग=दुर्ग (किला)।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का वर्णन है। यहां शुक पद्मावती से दिल्ली की शोभा का वर्णन करता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि वह पक्षी अर्थात् तोता पद्मावती के पास पहुंचकर कहने लगा, "सुनो, सुनो !" यह कहकर वह तोता पद्मावती का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए अपनी सुन्दर कथा बताने लगा। कहने का तात्पर्य यह है कि तोते ने आग्रहपूर्वक पद्मावती का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और कहा कि हिन्दुस्तान हिन्दुओं का सुन्दर एवं उत्तम देश है। वहां पर दिल्ली नाम का एक दुर्ग (किला) अपना सिर ऊंचा उठाए खड़ा है। कहने का भाव है कि दिल्ली का किला बहुत ऊंचा है और उसकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैली हुई है।

विशेष :-

(1) तोता पद्मावती को सम्बोधित कर उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है तथा बड़ी बुद्धिमता से पद्मावती को आग्रहपूर्वक अपनी बात सुनने के लिए कहता है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) पद्धरी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(5) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(7) आकर्षक गयेता तथा लयात्मकता है।

(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(10) 'कथा कहत' में छेकानुप्रास अलंकार है।

(11) 'सुमि सुमि' में पुनरुक्ति अलंकार है।

(12) 'सुनि सुनि सुवत' में व त्यानुप्रास अलंकार है।

[16]

संभरि नरेस चहुंआन थानं, प्रथिराज तहां राजंत भानं।
बैसह बरीस षोडस नरिदं, आजानु बाहु भुअलोक चंदं।।
संभरि नरेस सोमेस पूत, देवंत रूप अवतार धूत।
तासु मंसूर सब्बै अपार, भूजानं भीम जिम सार भार।।

शब्दार्थ :-

संभरि=सांभर झील के आसपास का क्षेत्र जिसे शकम्बरी भी कहते हैं, नरेस=राजा, चहुंआन थान=चौहान वंशीय राजाओं का स्थान (राजधानी), प्रथिराज=पृथ्वीराज, राजंत=सुशोभित, भानं=सूर्य के समान, बैसह=आयु (वयस), बरीस=वर्ष, षोड़स=सोलह नरिदं=राजा, आजानु बाहु=घुटनों तक लम्बी भुजाओं वाला, भुअलोक=पृथ्वी लोक, चंदं=इन्द्र, संभरि नरेस=संभरि नरेश, पूत=पुत्र, देवंत=देवताओं जैसा, धूत=चीर (धारण किया), तासु=उसका, मंसूर=सामन्त, सब्बै=सब, अपार=असीम, भूजांन=भुजाओं में, सार=लोहा (शक्ति)।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'पृथ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्धृत हैं। इसमें पृथ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का वर्णन है। यहां कवि शुक के माध्यम से पद्मावती के समक्ष पृथ्वीराज की वीरता और उसके बल का वर्णन करता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि वह दिल्ली का किला चौहान वंशी 'शाकम्बरी' राजाओं की राजधानी है। कवि ने पृथ्वीराज के वंशजों को शाकम्बरी इसलिए कहा है, क्योंकि उनके पूर्वज सांभर झील के आसपास रहते थे। वहां दिल्ली में पृथ्वीराज सूर्य के समान सुशोभित है। अर्थात् सूर्य के समान तेजस्वी पृथ्वीराज दिल्ली प्रदेश में राज्य कर रहा है। उस राजा की आयु केवल सोलह वर्ष है। वह मनुष्यों में इन्द्र के समान प्रतापी है। घुटनों तक लम्बी-लम्बी उसकी भुजाएं हैं और वह इस पृथ्वी लोक पर इन्द्र के समान बलशाली राजा है। कहने का तात्पर्य यह है कि सोलह वर्ष की अल्प आयु में पृथ्वीराज ने इन्द्र के समान अपनी वीरता और प्रताप का परिचय दे दिया था। इसलिए कवि ने उसे पृथ्वी पर इन्द्र के समान शक्तिशाली माना है।

पृथ्वीराज सांभर के राजा सोमेश्वर का बेटा है। देवताओं के समान सुन्दर रूप धारण करके उसने पृथ्वी पर अवतार लिया है। वह बड़ा ही अद्भुत वीर और बलवान है। उसके सभी सामंत भी वीर और बलवान हैं। वीर सामंतों की भुजाएं भीम की भुजाओं के समान सुदृढ़ तथा लोहे के समान कठोर हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि केवल पृथ्वीराज चौहान ही शूरवीर, शक्तिशाली और बलवान नहीं था, बल्कि उसके समस्त सामंत भी पृथ्वीराज के समान शूरवीर, शक्तिशाली, बलवान और प्रतापी थे।

विशेष :-

(1) पृथ्वीराज के स्वरूप, उसके गुणों और वीरता का वर्णन है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) पद्धरी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(10) 'बैसह बरीय', 'भूजान भीम' में छेकानुप्रास अलंकार है।

(11) सम्पूर्ण पद में उपमा अलंकार है।

टिप्पणी -

प्राचीनकाल में सांभर और अजमेर का बड़ा ही शक्तिशाली राज्य था। प थ्वीराज के पिता का नाम सोमेश्वर था। वे इसी विशाल और शक्तिशाली राज्य के स्वामी थी।

'अजान बाहु'-सामुद्रिक शास्त्र में बताया गया है कि जिस पुरुष की भुजाएं घुटनों तक लम्बी होती हैं वे वीर, बलवान तथा महापुरुष होते हैं। वीर शिवाजी को भी अजान बाहु कहा गया है। वैसे ही अर्जुन को भी महाभारत में अजानबाहु कहा गया है।

[17]

जिहि पकटि साह साहाब लीन, तिंह बेर कटिल पानीप हीन।
सिंगिनिं सुसद्द गुन चढ़ि जंजीर, चुक्के न संबद बेघंत तीर।।
बल बैन करन जिमि दांन पान सत्त सहस सील हरिचंद सयान।
साहस सुक्रम विक्रम जु वीर, दानव सुमंत अक्तार धीर।।
दिस-च्यारि जानि सब कला भूप, कूदप्प जान अक्तार रूप।।

शब्दार्थ :-

जिहि=जिसने, पकरि=पकड़कर, साह=बादशाह, साहाब=शहाबुद्दीन गौरी, लीन=लिया, तिहुं बेर=तीन बार, कटिल=किया, पानीप हीन=जिसकी प्रतिष्ठा धूल में मिला दी, सिंगिनि=धनुष की डौरी, सुसद्द=टंकार, गुन=गुण (प्रत्यंचा), जंजीर=सांकल, चुक्के=चूकना, संबद=शब्द, बेघंत=भेद देता है, बल=राजा बलि, बैन=वचन, करन=राजा कर्ण, जिमि=ज्यों (के समान), दांन पान=दान पाणि (दान करने वाला, सत्त=सौ, सील=शीलवान, सुक्रम=सुकर्म, विक्रम=राजा विक्रमादित्य, जु=जो, दानव=दानव (दैत्य), सुमंत=अत्यधिक उन्मत्त, धीर=धैर्यशाली, दिस=दिशा, च्यारि=चार, दिशा च्यारि=चौदह (दस+चार=चौदह), कला=प्रताप, क्रदप्प=कदर्प (कामदेव)।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्द्य त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का वर्णन है। यहां कवि शुक के माध्यम से दिल्ली नरेश प थ्वीराज चौहान के ज्ञान, गुण तथा वीरता का वर्णन करता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि ये वही वीर एवं प्रसिद्ध प थ्वीराज चौहान हैं जिसने गजनी के राजा शहाबुद्दीन को तीन बार पकड़ा और उसकी प्रतिष्ठा को धूल में मिलाकर छोड़ दिया अर्थात् प थ्वीराज ने मोहम्मद गौरी को तीन बार युद्ध में पराजित कर कैद किया था और फिर उसे अभय दान दे दिया था। इससे गौरी की मान मर्यादा नष्ट हो

गई थी। ऐसे उस वीर पथ्वीराज के धनुष पर लोहे के जंजीर की डोरी चढ़ती है। (यदि यहां सिंगिनी का अर्थ सिंगिनि न किया जाये तो अर्थ होगा-संगी का बना धनुष। इसी प्रकार से सामान्य धनुष में प्रायः रेशम, धागे या चमड़े की तांत की डोरी (प्रत्यंचा) चढ़ाई जाती है। परन्तु पथ्वीराज के धनुष की डोरी लोहे की जंजीर की बनी थी। पथ्वीराज के धनुष की प्रत्यंचा की टंकार से भयंकर ध्वनि उत्पन्न होती थी। पथ्वीराज अचूक शब्दबेधी बाण चलाने वाले योद्धा थे। कहने का भाव है कि केवल आवाज को सुनकर ही लक्ष्य को आंखों से देखे बिना वे निशाने पर तीर चलाते थे। शब्दबेधी बाण चलाने की यही कला होती है।

पथ्वीराज की दढ़ प्रतिज्ञा और दानवीरता का वर्णन करते हुए तोता कहता है कि वे वचन का पालन करने में राजा बलि के समान थे तथा दान देने में राजा कर्ण के समान और वह शील (सुन्दर आचरण) में सैकड़ों हरिश्चन्द्र राजाओं के समान हैं। (यदि यहां सत् का अर्थ सत्य माना जाए तो अर्थ होगा-वह सत्य और शील का पालन करने में सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र के समान है)।

साहस तथा सद्कर्म करने में वह राजा विक्रमादित्य के समान वीर तथा साहसी है। उन्होंने उन्मत्त दानवों का संहार करने के लिए अवतार लिया है और वे बड़े ही धैर्यवान हैं। चारों दिशाओं में सभी लोग उस पथ्वीराज की कला अर्थात् तेजस्वी रूप को अच्छी प्रकार से जानते हैं। वह शरीर रूप से इतना सुन्दर है कि मानो साक्षात् कामदेव का अवतार है। इस प्रकार पथ्वीराज शूरवीर, दानवीर और धैर्यशाली हैं।

विशेष :-

(1) पथ्वीराज के वंश, वीरता, सौन्दर्य और सत्यवादिता का वर्णन है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) पद्धरी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(5) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(7) आकर्षक गेयता और लयात्मकता है।

(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(10) 'साह साहाब', 'सिगिनि सुसद्द', 'बल बैन', 'साहस सक्रम' में छेकानुप्रास अलंकार है।

(11) 'सत सहस सील' में व त्यानुप्रास अलंकार है।

[18]

कामदेव अवतार हुअ, सुअ सोमेसर नन्द।
सहस-किरन झलहल कमल, रति समीप बर बिन्द।।

शब्दार्थ :-

हुअ=हुआ, सुअ=सुत (पुत्र), नन्द=आनन्द देने वाला, सहंस=किरण, झलहल=सहस्त्र किरणों वाले सूर्य के समान झिलमिलाने वाला, रति=कामदेव की पत्नी का नाम, बर=श्रेष्ठ, बिन्द=पति (राजस्थानी भाषा में पति को आज भी बिन्द कहा जाता है)।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌द्य त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का वर्णन है। यहाँ कवि पद्मावती के समक्ष शुक के माध्यम से राजा प थ्वीराज चौहान की वीरता और सुन्दरता का वर्णन करता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि राजा सोमेश्वर के ह्रदय में आनन्द प्रदान करने वाला उनका यह राजकुमार ऐसा लग रहा था, मानो कामदेव ने उसके रूप में स्वयं अवतार लिया है। प थ्वीराज कमलों को प्रफुल्लित करने वाले सहस्त्रों किरणों से सुशोभित चमकते हुए सूर्य के समान तेजस्वी हैं तथा वह रति के पास स्थित उसके पति कामदेव के समान सुन्दर हैं। अर्थात् जिस प्रकार सहस्त्र किरणों वाले सूर्य के तेज से कमल खिल जाते हैं, उसी प्रकार प थ्वीराज के तेजस्वी रूप को देखकर लोग प्रसन्न हो जाते हैं। इस प्रकार प थ्वीराज चौहान का रूप सौन्दर्य अनुपम है।

विशेष :-

(1) शुक पद्मावती को यह इशारा करता है कि वह प थ्वीराज तुम्हारे समीप उसी प्रकार सुशोभित है जिस प्रकार कामदेव रति के पास सुशोभित होता है। अतः तुम्हें (पदमावती) को प थ्वीराज का अवश्य वरण करना चाहिए।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) श्रृंगार-रस का सुन्दर परिपाक है।

(4) दोहा-छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(9) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(11) 'बर बिन्द' में छेकानुप्रास अलंकार है।

[19]

सुनत स्त्रवन प थिराज जस, उमग बाल विधि अंग।
तन मन चित्त चहुंआन पर, बस्यौ सु-स्त्रह रंग।।

शब्दार्थ :-

स्त्रवन=श्रवण (कान), प थिराज=प थ्वीराज, जस=यश, उमंग=उमंगित होना, बाल=युवती (पद्मावती), विधि=भली प्रकार, तन=शरीर, चित=ह्रदय, सु-स्त्रह=सुरति (प्रेम), रंग=प्रेम का वर्ण।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌द्य त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम प्रसंग तथा विवाह का अनुपम वर्णन है। यहाँ कवि ने तोते के माध्यम से प थ्वीराज की वीरता, यश और गुणों का जो आकर्षक

चित्रण किया है उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप पद्मावती के मन पर जो प्रतिक्रिया हुई उसी का वर्णन है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि अपने कानों से प थ्वीराज चौहान के यश को सुनकर पद्मावती के शरीर के सभी अंग-प्रत्यंग पूर्णतः उमंगित हो उठे। अर्थात् पद्मावती के शरीर के सभी अंगों में रोमांच उत्पन्न हो गया। उसके शरीर, मन और ह्रदय पर चौहान राजा प थ्वीराज का रंग चढ़ गया। कहने का भाव यह है कि तोते के मुख से प थ्वीराज के यश और वीरता का वर्णन सुनकर पद्मावती शरीर, मन और ह्रदय से प थ्वीराज से प्रेम करने लगी। वह प थ्वीराज के प्रेम में रंग गई तथा उस पर अनुरक्त हो गई। इस प्रकार पद्मावती के ह्रदय में प थ्वीराज के प्रति असीम प्रेम जाग्रत हो गया।

विशेष :-

(1) नायक के गुणों को सुनकर नायिका पद्मावती के ह्रदय में प्रेम के सात्विक भाव उदित हो जाते हैं। काव्यशास्त्रीय द ष्टि से इस स्थिति को पूर्वराग कहते हैं। यह एक कथानक रूढ़ि है। जिसका अनेक प्रेम कथाओं में वर्णन हुआ है जैसे-जायसी के 'पदमावती' में हीरामन तोते के मुख से पद्मावती के रूप सौन्दर्य का वर्णन सुनकर रत्नसेन के ह्रदय में पद्मावती के प्रति प्रेम भाव जाग्रत होना भी पूर्वराग कहलाता है।

(2) डिंगल पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) श्रं गार रस का अनुपम परिपाक है।

(4) दोहा-छन्द का सफल प्रयोग है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता और लयात्मकता है।

(9) प्रसाद ओर ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(11) 'सुनत स्त्रवन', 'चित्त चहुंआन' में छेकानुप्रास अलंकार है।

[20]

बैस बिती ससिता गई, आगम कियो बसन्त।
मात-पिता चिन्ता भई, सोधि जुगति कौ कन्त।।

शब्दार्थ :-

बैस=वयस, (आयु), बिती=व्यतीत हुई, समाप्त हुई, ससिता=शिशुता, बाल्यावस्था=बचपन, आगम=आना, सोधि=खोजना, जुगति=युक्ति, कौ=का= कन्त=वर।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्द्य त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि पद्मावती के यौवनावस्था में पहुंचने पर उसके माता-पिता की योग्य वर खोजने की चिन्ता का वर्णन करता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि अब पद्मावती की बाल्यावस्था व्यतीत हो गई थी। अर्थात् उसकी शिशुता अर्थात् बचपन समाप्त हो गया। उसके शरीर में बसन्त का आगमन होने लगा अर्थात् उसके शरीर में यौवन के चिह्न दिखाई देने लगे अर्थात् अब वह वयःसन्धि को त्यागकर नवयौवना नायिका बन गई थी। यह देखकर उसके माता पिता को चिन्ता सताने लगी कि उसके लिए (पद्मावती) उचित वर की खोज करनी चाहिये। इस प्रकार पुत्री के यौवनावस्था में पहुँचने पर उसके लिए वर की खोज की चिन्ता माता-पिता के लिए सहज एवं स्वाभाविक है।

विशेष :-

(1) यह सामाजिक सत्य है कि जब भी किसी माता-पिता की बेटी यौवनावस्था में कदम रखती है तो उसके विवाह के लिए योग्य वर खोजने की चिन्ता उन्हें सताने लगती है।

(2) दोहा छन्द का प्रयोग है।

(3) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(4) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(5) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(6) आकर्षक गेयता और लयात्मकता है।

(7) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(8) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(9) 'बैस बिति', 'कौ कन्त' में छेकानुप्रास अलंकार है।

(10) 'बसन्त' शब्द में रूपकातिशयोक्ति अलंकार है।

[21]

सोधि जुगति कौ कन्त, कियो तब चित्त चहौं दिस।
लयो विप्र गरू बोल, कही समुझाय बात तस।।
नर नरिन्द नरपति बड़े, गढ़ दुग्ग असेसह।
सीलवन्त कुल सुद्ध, देहु कन्या सुनरेसह।।
तब चलन देहु दुज्जह लगन, सगुन बन्द हिय अप्प तन।
आनन्द उच्छाह समुवह सिधर, बजत नद्द नीसांन घन।।

शब्दार्थ :-

सोधि=शोध-खोजना, जुगति=युक्ति, बोल=बुलाया, तस=इस प्रकार, नर=मनुष्य, नरिन्द=राजा, नरपति=राजा, असेसह=असंख्य, सुनरेसह=श्रेष्ठ राजा को, चलन=रीति-रस्म, दुज्जह=द्विज को, ब्राह्मण को, लगन=लग्न, सगुन=तिलक, टीका, बन्द=वन्दन-रोली, अप्प तन=स्वयं अपने हाथ से, समुदह सिधर=समुद्र शिखर में, नद्द=नाद-घोष-शोर, नीसांन=नगाड़े, घन=सघन, घनघोर, प्रचण्ड।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्द्य त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम-प्रसंग तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि उस स्थिति का वर्णन करता है जब राजकुमारी पद्मावती का पिता राजा विजय

अपनी पुत्री के विवाह की चिंता से ग्रस्त हो कर अपने कुल पुरोहित को बुलाकर उसे समझाता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि राजा विजय ने अपनी बेटी पद्मावती के लिए योग्य वर खोजने के लिए अपने मन को चारों दिशाओं में दौड़ाया। भाव यह है कि वह अपने मन में बार-बार सोचने लगा कि उसकी सुन्दर पुत्री के लिए कौन सा राजा योग्य वर के रूप में हो सकता है। बाद में उसने अपने कुल पुरोहित को बुलाया और उसे सारी बात समझाकर कही उसने कहा कि इस संसार में अनेक मानव और मानवों में इन्द्र के समान बड़े-बड़े प्रतापी राजा और नरेश हैं। उनके पास अनेक बड़े-बड़े किले और दुर्ग हैं। तुम उनमें से जिसको शीलवान और श्रेष्ठ (युद्ध) कुल का समझते हो, उस सुन्दर राजा को यह कन्या दे दो, अर्थात् तुम किसी कुलीन शीलवान और प्रतापी राजा को देखकर मेरी बेटी पद्मावती की सगाई पक्की कर दो। यह सब समझाने के बाद राजा विजय ने अपने कुल पुरोहित को लग्न तथा टीके की रोली आदि सारी सामग्री अपने हाथों से देकर उसे यात्रा के लिए विदा कर दिया। यही नहीं, राजा ने अपने मन में शुभ शकुनों का विचार किया और ईश्वर से प्रार्थना की कि वह अपने इस कार्य में सफलता प्राप्त करे। राजकुमारी का टीका भिजवाने की खुशी में समुद्र शिखर राज्य में चारों ओर आनन्द और उत्साह की लहरें दौड़ गई और बादलों की गम्भीर गर्जना के समान गड़गड़ाहट में भयंकर नगाड़े बजने लगे। इस प्रकार राजकुमारी का टीका भिजवाने का शुभ समाचार सुन कर समुद्र शिखर राज्य का प्रत्येक जन आनन्द और उत्साह में परिपूर्ण होकर झूम उठा।

विशेष :-

(1) राजा विजय द्वारा अपनी पुत्री राजकुमारी पद्मावती का टीका भिजवाने से राजा की सम्पूर्ण प्रजा खुशी से झूम उठती है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) कवित्त छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(5) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(7) आकर्षक गेयता और लयात्मकता है।

(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(10) 'चित्त चहौ', 'देहु दुज्जह', 'समुदह सिधर', 'नद्द नीसांन' में छेकानुप्रास अलंकार है।

(11) 'नट नरिन्द नटपति' में व त्यानुप्रास अलंकार है।

[22]

सवालष्ष उत्तर, सयल, कमऊं गढ़ दूरंग।
राजत राज कुमोदमनि, हय गय ब्रिब्बं अमंग।।

शब्दार्थ :-

सवालष्ष=सवा लाख (शिवालिक पर्वत की चोटियां), उत्तर=उत्तर दिशा, सयल=पर्वत (शैल),

कऊं=आज का कुमायूं, गढ़=किला, दूरग=दुर्गम, राजत=सुशोभित, कुमोदमनि=कुमायूं के राजा का नाम, हय=घोड़े, गय=हाथी, द्रिबं=द्रत्य, अभंग=असंख्य।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्द्य त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम-प्रसंग तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि उस समय का वर्णन करता है जब राजा विजय का कुल पुरोहित उसकी बेटी पद्मावती के लिए योग्य वर की खोज करता हुआ उत्तर दिशा में हिमालय पर्वत पर स्थित कुमायूं नामक राज्य में जा पहुंचता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि उत्तर दिशा में शिवालिक नामक पर्वत की श्रेणियों में कुमायूं नाम का एक अत्यन्त दुर्गम किला विद्यमान है। वहां पर कुमोदमणि नाम का राजा राज्य करता हुआ सुशोभित हो रहा है। उस राजा कुमोदमणि के पास असंख्य घोड़े, हाथी तथा अपार धन-सम्पत्ति है। कहने का भाव यह है कि कुमोदमणि नाम का राजा कुमायूं का राजा था और उसके पास अपार धन-सम्पत्ति तथा घोड़े और हाथी थे।

विशेष :-

(1) राजा कुमोदमणि के धन-वैभव और उसकी सेना का अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णन है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) दोहा छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(5) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(7) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(8) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(9) 'राजत राज' में पुनरुक्ति अलंकार है।

टिप्पणी -

कुछ टीकाकारों ने 'सवालष्ष' का अर्थ 'सपाद लष्ष' तथा कुछ न 'सवा लाख' किया है, परन्तु 'सपाद लष' अर्थ असंगत प्रतीत होता है। उस काल में अजमेर और सांभर का प्रदेश सपाद लष्ण के नाम से प्रसिद्ध था, इसलिए कुमांयू के साथ उसका कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता। इन दोनों प्रदेशों में हजारों मीलों का अन्तर है। सवा लाख अर्थ के अतिशयोक्ति के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। अर्थात् कुमायूं का क्षेत्र उत्तर दिशा में सवा लाख पर्वतों के बीच विद्यमान है। आज भी इसे शिवालिक ही कहते हैं।

[23]

नारिकेल फल परठि दुज, चौक पूरि मनि-मुत्ति।
दई जु कन्या बचन बर, अति अनन्द करि जुत्ति।।

शब्दार्थ :-

नारिकेल=नारियल, परठि=स्थापित करके, दुज=द्विज (ब्राह्मण), मनि-मुत्ति=मणि और मोती, बचन बर=वाग दान (अर्थात् सगाई करना), अनन्द=आनन्द, जुत्ति=युक्ति (विधि)।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम-प्रसंग तथा विवाह का सजीव तथा मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि उस समय का वर्णन करता है जब कुमायूं के दुर्ग में पहुंच कर राजा विजय के कुल-पुरोहित ने वहाँ के राजा कुमोदमणि को वर के रूप में पसन्द कर उसके साथ पद्मावती की सगाई पक्की कर देता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि कुमायूं के दुर्ग में पहुंच कर राजा विजय के कुल-पुरोहित ने मणियों और मोतियों से चौक पूर कर उसके बीच नारियल के फल स्थापित कर दिए और फिर आनन्दपूर्वक विधि से पद्मावती का राजा कुमोदमणि के साथ वाग्-दान कर दिया। अर्थात् कुल-पुरोहित ने राजा कुमोदमणि के साथ पद्मावती की सगाई पक्की कर दी।

विशेष :-

(1) कुमायूं के राजा कुमोदमणि तथा पद्मावती की सगाई का परम्परागत वर्णन है।

(2) दोहा-छन्द का प्रयोग है।

(3) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(4) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(5) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(6) आकर्षक गेयता ओर लयात्मकता है।

(7) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(8) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(9) 'बचन वर', 'अति अनन्द' में छेकानुप्रास अलंकार है।

टिप्पणी -

यदि यहाँ 'परठि का अर्थ देकर ओर 'वचन' का अर्थ श्लोक माना जाये तो एक नया अर्थ इस प्रकार से हो सकता है-कुल पुरोहित ने मणियों और मोतियों से चौक पूर कर पवित्र श्लोकों का उच्चारण करते हुए कुमोदमणि को नारियल का फल देकर कन्या की सगाई कर दी। इस प्रकार यह नया अर्थ भी सार्थकता को प्रकट करता है।

[24]

भुजंगी-विहसित वरं लगन लिन्नो नरिन्दं।
बजी द्वार द्वारं सु आनन्द दुन्दु।
गढनं गढ़ं पति सब बोल नुंते।
आइयं भूप सब कटुम्म सुजत्ते।।

शब्दार्थ :-

विहिसित=विहंसते हुए-मधुर हास्य के साथ, वरं=वर-राजा कुमोदमणि, लिन्नो=लियो, द्वार-द्वारं=घर-घर (दरवाजे-दरवाजे), दुन्दं=नगाड़े, गबढ़पति=गढ़पति-राजागण, बोल नुंते=न्यौता देकर बुलाया, कटुम्म=कुटुम्ब, सुजत्ते=साथ-सपरिवार।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि पद्मावती की सगाई हो जाने के पश्चात् राजा कुमोदमणि के राज्य में मनाई जाने वाली खुशियों का वर्णन करता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि वर अर्थात् राजा कुमोदमणि ने प्रसन्नतापूर्वक (मधुर हास्य के साथ) राजा विजय के कुल-पुरोहित द्वारा दी गई लग्न को ले लिया। अर्थात् पद्मावती की सगाई को स्वीकार कर लिया। यह समाचार सुनकर कुमायूं नगर के प्रत्येक द्वार पर अर्थात् घर-घर में आनन्द के नगाड़े बजने लगे। भाव यह है कि राजा कुमोदमणि की सगाई का समाचार पाकर कुमायूं के नागरिक आनन्दित हुए और अपने अपने घरों के द्वार पर दुदुभियां बजाने लगे। राजा कुमोदमणि ने अपने सभी गढ़ पतियों को अर्थात् राजाओं और सामन्तों को निमन्त्रण देकर अपने यहां बुलावा भेजा और सभी राजा लोग सपरिवार वहां पहुंच गये। इस प्रकार राजा कुमोदमणि की सगाई का समाचार सुनकर सभी राजा गढ़-पति, सामंत और प्रजा आनंद और प्रसन्नता से विभोर हो उठे।

विशेष :-

(1) कुमायूं नरेश कुमोदमणि तथा वहाँ के नागरिकों की प्रसन्नता का सुन्दर वर्णन है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) भुजंगी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(5) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(7) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(10) 'लगन लिन्नो' में छेकानुप्रास अलंकार है।

(11) 'द्वार द्वार', 'गढ़नं गढ़ं' में पुनरुक्ति अलंकार है।

[25]

भुजंगी-चले दस सहस्सु असब्बार जानं।
परियं पैदलं तेलीस थानं।
मत्त मद गलित सौ पंच दन्ती।
मनो सीय पाहार बुगपंति पंती।।

शब्दार्थ :-

सहस्यु=सहस्त्र (हजार), असब्बार=घुड़सवार, जान=बारात (यान, रथ आदि), राजस्थान में आज भी बारता को जानं कहा जाता है, परियं=भर गए, थानं=स्थान, तेलीस=तीस, मत्त मद, गलित=मदस्त्राव टपकाने वाले हाथी, दन्ती=हाथी, सौ पंच=पांच सौ, साम=श्याम (काले रंग वाले), बुगपंति=बगुले की पंक्ति।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम प्रसंग तथा विवाह का मनोहारी चित्रण किया है। यहाँ कवि राजा कुमोदमणि की विशाल बारात का वर्णन करता है, जिसमें चतुरंगिनी सेना साथ चल रही थी।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि राजा कुमोदमणि अपनी बारात को सजाकर कुमायूं से चल पड़ा। उसके साथ दस हजार घुड़सवार और रथ तथा भारी संख्या में पैदल सैनिक थे। उनसे तीस पड़ाव पूरी तरह से भर गए थे। कहने का भाव यह है कि सेना के तीस स्थानों को पूरी तरह भर देने वाले पैदल सैनिक थे अथवा यह अर्थ भी किया जा सकता है कि राजा की बरात में तेंतीस स्थानों से आए असंख्य पैदल सैनिक थे। कवि पुनः कहता है कि बारात के साथ पांच सौ मदोन्मस्त हाथी थे जिनके मस्तकों से मद टपक रहा था। उन हाथियों के सफेद लम्बे दांत ऐसे प्रतीत हो रहे थे मानो काले पर्वतों पर सफेद बगुले पंक्तियां बांध कर बैठे हों।

यहाँ यदि पहाड़ का अर्थ पयोधर या बादल किया जाए तो अर्थ इस प्रकार होगा - मानो काले बादलों में सफेद बगुलों की पंक्तियां उड़ रही हों। उपमा की द ष्टि से यह अर्थ अधिक आकर्षक और सटीक लगता है क्योंकि बगुले पर्वतों की चोटियों पर पंक्तियां बनाकर नहीं बैठते बल्कि काले बादलों से ढके आकाश में पंक्तियां बनाकर उड़ते हैं। महाकवि कालीदास ने भी मेघदूत में कुछ इसी प्रकार का मनोहारी वर्णन किया है। इस प्रकार राजा कुमोदमणि की बारात का वैभवशाली दर्शन देखकर मानव-मात्र का ह्रदय प्रसन्न हो जाता है।

विशेष :-

(1) राजा कुमोदमणि की बारात का प्रभावशाली वर्णन है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) भुजंगी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(5) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(7) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(10) 'परिय पैदल', 'मत्त मद' में छेकानुप्रास अलंकार है।

(11) 'मनो सोम पाहार बुगपति पंती', में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

[26]

भुजंगी चले अग्गि तेजी जु तत्ते तुषारं।
चौवरं चौरासी जु, सकत्ति भारं।
कंठं नगं नूपं अनोपं सुलालं।
रंग पंच रंग डलकन्त डालं।।

शब्दार्थ :-

अग्गि=आगे, तेजी=तीव्र गति से, जु=जो, तत्ते=तप्त (तीव्र), तुषारं=तुषार देश के घोड़े जो तीव्र गति से दौड़ते हैं, चौवरं=चबर (कलगी), चौरासी=घोड़े के गले में पहनाई जाने वाली घुंघरूओं की माला, साकति=शक्ति (शास्त्र), भारं=बोझ, कंठं=गला, नूपं=अनूपं, नगं=हीरे, सुलालं=लाल रंग वाला रत्न, रंग=रंगी हुई, ढलकन्त=हिलती हुई, ढालं=ढाल।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का सजीव तथा सुन्दर चित्रण है। यहाँ कवि ने राजा कुमोदमणि की बारात में चलने वाले घोड़ों तथा उनकी साज-सज्जा का मनोहारी वर्णन किया है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि राजा कुमोदमणि की बारात में तुषार देश के अत्यधिक तेज दौड़ने वाले घोड़े बड़ी तेजी के साथ सबसे आगे चलने लगे। इन घोड़ों के मस्तकों पर कलंगियां लगी थीं और उनके गले में घुंघरूओं की माला अर्थात् चौरासियां सुशोभित हो रही थीं। ये घोड़े अपनी ही शक्ति के बोझ से लदे हुए थे। उनके ले में अत्यधिक सुन्दर और अनुपम रत्नों के लालों से जड़ी काठियां सुशोभित हो रही थीं। उन घोड़ों की पीठ पर लटकती हुई पांच रंगों वाली ढालें घोड़ों के तेज चलने से हिल रही थीं। इस प्रकार घोड़े साज-सज्जा के सुसज्जित आकर्षक लग रहे थे।

विशेष :-

(1) राजा कुमोदमणि की बारात की सेना के घोड़ों की वेशभूषा तथा उनकी गति का सजीव वर्णन है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) भुजंगी छन्द का सुन्दर एवं आकर्षक प्रयोग है।

(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(5) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(7) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(10) 'तत्ते तुषार', 'चौटारं चौरासी', 'नगं नूपं', 'ढलकन्त ढालं' में छेकानुप्रास अलंकार है।

[27]

भुजंगी-पंच गुट सुर सबाइ बाजिन्न बाजं।
सहस समनाय ग्रिग मोहि राजं।
समुद्र सिर सिषर उच्छाह छाहं।
रचित मुण्डपं तोरन श्रीयगाहं।।

शब्दार्थ :-

पंच सुर=पांच प्रकार के स्वर -पांच प्रकार के बाजे-ताल, तंत्री, झाल, नगाड़ा ओर तुरही,

सवाद्द=शब्द-ध्वनि, बाजित=बज रहे थे, बाजं=बाजे, समनाय=शहनाई-एक प्रकार का बाजा जो मंगलकार्यों के अवसर पर बजाया जाता है। इसे 'नफीरी' भी कहते हैं, म्रिग=म ग, राजं=राजित-सुशोभित, सिर=ऊपर, उच्छाह=उत्साह-आनन्द, छाहं=छा रहा था, तोरन=तोरण-वन्दनवार, श्रीयगाहं=सौन्दर्य का भण्डार-अगाध सौन्दर्य।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्द्य त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि उस समय का वर्णन करता है जब कुमायूं से कुमोदमणि की बारात का प्रस्थान करने का समाचार समुद्र शिखरवासियों को मिला तो वहाँ सर्वत्र खुशी का वातावरण छा गया।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनमोहक चित्रण करता हुआ कहता है कि समुद्र शिखर में पांच प्रकार के वाद्य-यन्त्रों (ताल, तंत्री, नगाड़ा, झांज, तुरी) अपने भिन्न-भिन्न प्रकार के पांच स्वरों के साथ बजाए जा रहे थे। म गों को भी मोहित करने वाला हजारों शहनाईयों का संगीत चारों ओर गूंज रहा था। समूचे समुद्र शिखर प्रदेश में उत्साह और आनन्द का वातावरण छाया हुआ था। नगरों के चारों तरफ अपार शोभाशाली सुन्दर मण्डप तथा बन्दनवारें सजाए गए थे।

कहने का भाव यह है कि राजा कुमोदमणि की बारात के प्रस्थान करने के समाचार से समुद्र शिखर नगर में चारों तरफ उल्लास और प्रसन्नता का वातावरण छा गया था। वहां पांच प्रकार के वाद्य यन्त्र बजने लगे और शहनाईयां अपना मधुर स्वर उत्पन्न करने लगीं। यही नहीं लोग अपने घरों में सुन्दर बन्दनवारें तथा मण्डप सजाने लगे। इसी प्रकार सम्पूर्ण प्रजा में प्रसन्नता और उल्लास का वातावरण छा गया।

विशेष :-

(1) समुद्र शिखर निवासियों की प्रसन्नता तथा उल्लास का मनोहारी वर्णन है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) भुजंगी छन्द का सुन्दर एवं आकर्षक प्रयोग है।

(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(5) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(7) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(10) 'सुर सबाद्द', 'बापिन्न बाजं', 'सहस समनाय', 'म्रिग मोहि' में छेकानुप्रास अलंकार है।

(11) 'समुद्र सिर सिषर', में व त्यानुप्रास अलंकार है।

[28]

पदमावती बिलख कर बाल बेली।
कही कीट सों बयात तब हो अकेली।
झटं जाहु तुम कीट दिल्ली सुदेसं।
वरं चहुंवान जु आनौ नरेसं।।

शब्दार्थ :-

बिलखि=बिलखकर (व्याकुलता से रोकर), वर=श्रेष्ठ, बाल=बाला (युवती), बेली=बेल, कीर=तोता, झटं=तत्काल (जल्दी), सुदेसं=सुन्दर देश, वरं=वरण करना, चहुंवान=चौहान, आनौ=ले आओ, नरेसं=राजा।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि ने कुमायूं से आने वाली कुमादमणि की बारात के समाचार का राजकुमारी पद्मावती पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन किया है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनमोहक चित्रण करता हुआ कहता है कि अपनी बारात के आने का समाचार सुनकर श्रेष्ठ तथा सुन्दर कोमल लता के समान कांपती हुई पद्मावती अत्यन्त व्याकुल होकर रोने लगी। बिलखते हुए उसने एकान्त में तोते से ये बात कही - हे तोते ! तुम जल्दी से अर्थात् शीघ्रता से सुन्दर देश दिल्ली चले जाओ। यदि तुम वहां के राजा प थ्वीराज चौहान को यहां ले आओ तो मैं उनका वरण करूंगी। पद्मावती के कहने का अभिप्राय है कि वह केवल प थ्वीराज चौहान से ही विवाह करेगी। इसलिए उसने तोते को तत्काल दिल्ली जाने के लिए कहा। इस प्रकार पद्मावती प थ्वीराज चौहान से मिलने के लिए अत्यन्त व्याकुल है।

विशेष :-

(1) पद्मावती की मनोव्यथा का मार्मिक वर्णन है।

(2) पद्मावती का एकनिष्ट प्रेम दिल्ली के राजा प थ्वीराज चौहान के साथ था।

(3) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(4) भुजंगी छन्द का सुन्दर एवं आकर्षक प्रयोग है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(9) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(11) 'बाल बेली', 'कही कीट', में छेकानुप्रास अलंकार है।

[29]

आँनौ तुम चहुंवान वर, अरू कहि इहै संदेस।
साँस ससिरहि जौ रहै, प्रिय प्रथिराज नरेस।।

शब्दार्थ :-

आनौ=ले जाओ, चहुंवान=प थ्वीराज चौहान, वर=श्रेष्ठ, कहि=कहकर, इहै=यह, सरीरहि=शरीर में, जौ=जब तक, प्रथिराज=प थ्वीराज।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि उस स्थिति का वर्णन करता है जब कुमोदमणि की बारात समुद्र शिखर के लिए चल पड़ती है तथा पद्मावती कीट को दिल्ली जाने का आग्रह करती है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनमोहक चित्रण करता हुआ कहता है कि तुम मेरे (मन चाहे) वर अर्थात् पति प थ्वीराज चौहान को यहां ले आओ। साथ ही उन्हें मेरा यह संदेश कहना कि मेरे शरीर में जब तक सांसे रहेंगी, तब तक राजा प थ्वीराज चौहान ही मेरे प्रियतम रहेंगे। कहने का भाव यह है कि जब तक मैं जीवित रहूँगी, तब तक प थ्वीराज के अतिरिक्त किसी अन्य राजा को अपना पति स्वीकार नहीं करूंगी। मेरा एकनिष्ट प्रेम उसी दिल्ली नरेश से है।

विशेष :-

(1) पद्मावती के एकनिष्ट एवं स्थिर प्रेम का वर्णन है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) दोहा छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(5) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(7) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(10) 'साँस सरीरहि', 'प्रिय प्रथिराजं', में छेकानुप्रास अलंकार है।

[30]

प्रिय प्रथिराज नरेस, जोग लिषि कग्गर दिन्नौ।
लगुन बरग रचि सरब, दिन द्वादस ससि लिन्नौ।।
सै अरु ग्यारह तीस, साष संपत परमानह।
जीवित्री कुल सुद्ध, वरनि वर रष्षहु प्रानहं।।
दिष्षंत दिष्ट चच्चरिथ बर, इक पलक बिल्लब न करिय।
अलगाट रयन दिन पंच महि, ज्यों रुकमिनि कन्हर करिय।।

शब्दार्थ :-

जोग=यथा योग्य, लिषि=लिखकर, कग्गर=कागज (पत्र), दिन्नौ=दिया, लगुन=लग्न, बरग=कुंडलि, रचि=बनाकर, सरब=सब, द्वादस ससि=शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि, सै अरु ग्यारह=ग्यारह सौ तीस सम्वत्,साष=शक सम्वत्, परमानह=प्रमाणित (अवधि), जीवित्री=स्त्री, कुल सुद्ध=शुद्ध कु की, वरनि=वरण करने योग्य, वर=वरण करके, रष्षहु=रक्षा करी, प्रानह=प्राण (जीवन), दिष्षत=देखते ही, चच्चरिय=तत्काल चल दो, पलक=पलभर, विलम्ब=देर, करिय=करना, अलगाट=अलग-अलग, रयन=रात, महि=में, रुकमिनि=कृष्ण की पटरानी, कन्हर=श्रीकृष्ण, बरिय=वरण किया।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि उस स्थिति का वर्णन करता है जब पद्मावती अपने विवाह की लग्न तिथि आदि का विवरण एक पत्र पर लिखकर शुक को देती है ताकि वह उस पत्र को प थ्वीराज तक पहुंचा सके।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनमोहक चित्रण करता हुआ कहता है कि पद्मावती ने अपने प्रियतम राजा प थ्वीराज चौहान के लिए यथायोग्य लिखकर एक पत्र तोते को दे दिया। उसने इस पत्र में यह लिखा कि उसका विवाह किस तिथि को तथा किस लग्न में होने जा रहा है। उसने लिखा था कि शक् सम्वत् 1130 के वैशाख महीने की शुक्ल पक्ष की द्वादशी को उसका विवाह होना निश्चित हुआ है। कहने का भाव यह है कि पद्मावती ने अपने विवाह की तिथि, समय, स्थान आदि का पूरा विवरण पत्र में लिख दिया। आगे पत्र में उसने लिखा - अगर तुम मुझे शुद्ध कुल की स्त्री समझते हो अर्थात् तुम यदि समझते हो कि मेरा कुल तुम्हारे साथ सम्बन्ध रखने योग्य है तो तुम मेरा वरण करके मेरे प्राणों की रक्षा करो। हे प्रियतम ! तुम इस पत्र को अपनी द ष्टि से देखते ही तत्काल उठकर चल देना और एक पल की भी देरी न करना। अर्थात् यदि तुम समय पर न पहुंचे तो मेरा विवाह तुमसे नहीं हो सकेगा। जिस प्रकार श्रीकृष्ण ने रुकमिणी का वरण किया था उसी प्रकार तुम पांच दिन-रात में अर्थात् गुप्त रूप से आकर मेरा वरण कर लो। इस प्रकार पद्मावती प थ्वीराज को पत्र भेजकर प्रेम पूर्वक आने का निवेदन करती है।

विशेष :-

(1) पद्मावती के उस पत्र की चर्चा की गई है जो उसने गुरु के माध्यम से प थ्वीराज के पास भेजा था।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) कवित्त छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(5) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(7) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(10) 'प्रिय प्रथ्वीराज', 'दिन द्वादसं', 'साथ संपत', 'वरनि वर', 'तथा दिष्षत दिष्ट' में छेकानुप्रास अलंकार है।

[31]

ज्यो रुकमिनि कन्हर वरिय,त्यों वरि संभर कान्त।
सिव मंडप पच्छिम दिसा, पूजि समय सप्रान्त।।

शब्दार्थ :-

कन्हर=श्रीकृष्ण, वरिय=वरण किया, वरि=वरण करो, संभरकान्त=सांथर नरेश (प थ्वीराज चौहान), सिव मंडप=शिव मन्दिर, सप्रान्त=सुन्दर प्रभात बेला में।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का अनुपम वर्णन है। यहाँ कवि उस समय का वर्णन करता है जब कुमायूं का राजा कुमोदमणि पद्मावती को ब्याहने के लिए बारात लेकर चल पड़ा, तब पद्मावती का मन चंचल हो गया, उसने एक पत्र लिखकर तोते को दिया। उस पत्र में लिखा था कि प थ्वीराज को किस प्रकार उसका वरण करना चाहिए।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनमोहक चित्रण करता हुआ कहता है कि पद्मावती पत्र में लिखती है-'जिस प्रकार श्रीकृष्ण ने रुकमणि का (गौरी पूजन के अवसर पर) वरण किया था, उसी प्रकार तुम भी नगर की पश्चिम दिशा में स्थित शिव के मन्दिर में प्रभात बेला में पूजा के समय मेरा हरण कर लेना। कहने का भाव यह है कि मैं (पद्मावती) गौरी पूजा करने के लिए नगर की पश्चिम दिशा में स्थित शिव मन्दिर में प्रातःकाल आऊंगी। अतः तुम समय पर आकर मेरा वरण करके अपने साथ ले जाना। इस प्रकार पद्मावती अपने सात्विक प्रेम की सार्थकता के लिए पत्र द्वारा प थ्वीराज चौहान को संदेश भेजती है ताकि वह उसका वरण कर सके।

विशेष :-

(1) पद्मावती ने प थ्वीराज को उस पूजा-स्थल का पूरा परिचय दिया है जहाँ उसे गौरी पूजा के लिए जाना था।

(2) दोहा छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(3) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(4) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(5) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(6) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(7) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(8) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(9) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का सुन्दर प्रयोग है।

(10) 'समथ सप्रान्त', में छेकानुप्रास अलंकार है।

[32]

लै पत्री सुक यों चल्यौ, उड्‌यौ गगन गहि बाव।
जहँ दिल्ली प्रथिराज नर, अट्‌ट जाम में जाव।।

शब्दार्थ :-

पत्री=पत्र, सुक=तोता, गगन=आकाश, गहि बाव=हवा या वायु का रुख पकड़ कर, प्रथिराज नर=नर श्रेष्ठ प थ्वीराज, अष्ठ जाम=आठ पहर (एक दिन और एक रात)।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से

उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्‌मावती के प्रेम तथा विवाह का सजीव वर्णन है। यहाँ कवि उस समय का वर्णन करता है जब तोता पद्‌मावती का प्रेम पत्र लेकर दिल्ली की तरफ उड़ने लगा।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनमोहक चित्रण करता हुआ कहता है कि वह शुक पद्‌मावती का संदेश पत्र लेकर ऊपर आकाश और हवा का रुख लेकर तेजी से उड़ने लगा। कहने का भाव यह है कि उस समय वायु समुद्र शिखर से दिल्ली की ओर बह रही थी। अतः शुक उसी हवा के रुख को पकड़ कर तेजी से दिल्ली की ओर उड़ने लगा। वह तेजी से उड़ता हुआ आठ पहर अर्थात् एक दिन तथा एक रात में उस दिल्ली नगर में जा पहुंचा, जहाँ मनुष्यों में श्रेष्ठ प थ्वीराज राज्य करते थे। इस प्रकार तोता स्वामी भक्ति का पालन कर अपने कर्तव्य का पालन करता है।

विशेष :-

(1) शुक की तत्परता पर प्रकाश डाला गया है, जो केवल आठ पहरों में उड़कर दिल्ली नगर में पहुंच गया।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) दोहा छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) अभिधा शक्ति के प्रयोग के कारण अर्थ की सहज प्रतीति हुई है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(9) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(11) 'गगन गहि', में छेकानुप्रास अलंकार है।

[33]

दिय कग्गर न पराज कर, घुलि बंधिय प्रथिराज।
सुक देखत मन में हंसे, कियौ चलन कौ साज।।

शब्दार्थ :-

दिय=दिया, कग्गर=कागज, (संदेश पत्र), न पराज=सम्राट (प थ्वीराज) कर=हाथ, घुलि=खोलकर, बांधिय=बांचा (पढ़ा), चलन=चलने की, साज=तैयारी।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्‌मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्‌मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि उस समय का चित्रण करता है जब तोते द्वारा प थ्वीराज को पद्‌मावती का पत्र मिलता है जिसे पढ़कर प थ्वीराज समुद्र शिखर की ओर चलने की तैयार करता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनमोहक चित्रण करता हुआ कहता है कि तोता शीघ्रता से दिल्ली पहुँच

गया और उसने पद्मावती का दिया संदेश पत्र महाराज प थ्वीराज के हाथों में पकड़ा दिया। प थ्वीराज ने उस पत्र को खोलकर पढ़ा। यह देखकर तोता मन ही मन हंसा। अर्थात् तोता यह जानकर आनन्दित हो गया कि प थ्वीराज ने पत्र को पढ़कर समुद्र शिखर जाने का निर्णय लिया। इस प्रकार महाराज समुद्र शिखर जाने की तैयारियां करने लगे।

विशेष :-

(1) राजाधिराज प थ्वीराज चौहान ने पद्मावती का पत्र पढ़ते ही समुद्र शिखर जाने का निर्णय ले लिया।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का सहज, सरल एवं सुन्दर रूप है।

(3) दोहा छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) अभिधा शक्ति के प्रयोग के कारण अर्थ की सहज प्रतीति हुई है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(9) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

[34]

उहै घरी उहि पलन, उहै दिन बेर है सजि।
सकल सूर सामन्त, लिए सब बोलि बम्ब बजि।।
अरु कवि चन्द अनूप, रूप सरसैं बार कह बहु।
और सैन सब पच्छ, सहस सेना तिय सब्बहु।।
चामण्डराय दिल्ली धरह, गढ़पति कटि गढ़ भार दिय।
अलगार राज प्रथिराज तव, पूरब दिसि तन गमन किया।।

शब्दार्थ :-

उहै=उसी, घटी=घड़ी, पलनि=पल (क्षण), बेर=समय (बेला), सजि=सजकर (तैयार होकर), बम्ब=शंख (भेरी), बजि=बजने लगी (बजाकर), चन्द=चन्दबरदाई, सरसै=शोभित, बर=वर, कह बहु=अनेक प्रकार से कहकर, पच्छ=पछे, सब्बहु=संख्या, तिय=तीन, सहस=सहस्त्र (हजार), धरह=धरा (रखा, प थ्वी प्रदेश), कटि=नियुक्त करके, भार=बोझ (जिम्मेदारी), बलगार=गुप्त रूप से, गमन किया=प्रस्थान किया, तन=और।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम प्रसंग तथा विवाह का सुन्दर (मनोहारी) वर्णन है। यहाँ कवि उस समय का चित्रण करता है जब पद्मावती का संदेश पत्र प्राप्त करते ही राजाधिराज प थ्वीराज ने समुद्र शिखर की ओर प्रस्थान करने का निर्णय लिया तथा इस सम्बन्ध में उसी समय तैयारियां शुरु कर दीं।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनमोहक चित्रण करता हुआ कहता है कि राजा प थ्वीराज ने उसी घड़ी,

उसी पल, उसी दिन और उसी समय शंख अथवा नगाड़े (भेरी बजाकर) अपने सभी शूरवीर सामान्तों को बुलवा लिया। कहने का भाव यह है कि पथ्वीराज ने तनिक भी देर नहीं की और अपने श्रेष्ठ योद्धाओं को साथ चलने के लिए इकट्ठा कर लिया। यही नहीं, राजा ने अपने अनुपम कवि चन्दबरदाई को भी साथ बुला लिया। चन्दबरदाई ने आते ही अनेक प्रकार के बल अर्थात् पथ्वीराज के सुन्दर एवं सरल (आकर्षक) रूप का वर्णन किया। पथ्वीराज ने अपनी अन्य सेना को पीछे दिल्ली में छोड़कर केवल तीन हजार सैनिकों को ही अपने साथ ले लिया। उन्होंने अपने प्रधान सेनापति चामुण्ड राय को दिल्ली का गढ़पति बनाकर वहां की सारी जिम्मेदारी उसी को सौंप दी। पथ्वीराज ने यह सारी व्यवस्था गुप्त रूप से की और फिर गुप्त रूप से ही उसने प्रस्थान किया। कहने का भाव यह है कि पथ्वीराज ने यह सारी व्यवस्था गुप्त रूप से की ताकि शत्रु को उसके जाने का पता न चले और वह उसके मार्ग में कोई बाधा उपस्थित न कर सके। इस प्रकार पथ्वीराज ने अपनी सैन्य कुशलता को बड़े सुनियोजित ढंग से कार्यान्वित किया।

विशेष :-

(1) पथ्वीराज की उन सैन्य तथा प्रशासनिक तैयारियों का वर्णन है जिसे उसने समुद्र शिखर प्रस्थान करने के समय कार्यान्वित की थी।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) कवित्त छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(5) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(7) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(10) 'सकल सुर सामन्त', 'बोलि बम्ब बाजि', में वत्यानुप्रास अलंकार है।

(11) 'सहस सेना' में छेकानुप्रास अलंकार है।

[35]

जा दिन सिषर बरात गय, ता दिन गय प्रथिराज।
ताही दिन पतिसाह कौं, गई गजनै अवाज।।

शब्दार्थ :-

जा दिन=जिस दिन, सिषट=समुद्र शिखर, गय=गई, ताही=उसी, पतिसाह=शहाबुद्दीन गौरी, गज्जनै=गजनी में (शहाबुद्दीन का राज्य), आवाज=खबर (सूचना मिलना)।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'पथ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्धत हैं। इसमें पथ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि उस समय का वर्णन करता है जब कुमोदमणि तथा पथ्वीराज दोनों समुद्र शिखर पहुंच जाते हैं साथ ही बादशाह शहाबुद्दीन गौरी को भी यह सूचना मिल जाती है कि पथ्वीराज चौहान दिल्ली में नहीं हैं।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनमोहक चित्रण करता हुआ कहता है कि जिस दिन राजा कुमोदमणि की बारात समुदं शिखर में पहुंची, उसी दिन पथ्वीराज चौहान भी (अपने सैनिकों के साथ) पहुंच गया, लेकिन (दुर्भाग्य से) उसी दिन गजनी के बादशाह शहाबुद्दीन गौरी को भी यह सूचना मिल गई थी कि पथ्वीराज चौहान समुद्र शिखर में पद्मावती से विवाह करने के लिए गया हुआ है। कहने का भाव यह है कि जिस दिन पथ्वीराज समुद्र शिखर पहुंचा उसी दिन शहाबुद्दीन गौरी को भी पता चल गया कि पथ्वीराज दिल्ली में नहीं है।

विशेष :-

(1) गजनी के बादशाह शाहाबुद्दीन गौरी का परिचय दिया है। प्राचीनकाल में गजनी अफगानिस्तान की राजधानी थी और शाहाबुद्दीन वहीं का बादशाह था। यह नगर गजनी नामक नदी के किनारे बसा था। गौरी की पथ्वीराज से पुरानी दुश्मनी थी वह अनेक बार पथ्वीराज से पराजित भी हो चुका था।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) दोहा छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) अभिधा शक्ति के प्रयोग के कारण अर्थ की सहज प्रतीति हुई है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(9) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

[36]

सुनि गज्जनै आवाज, चलौ साहाबदीन वर।
पुरासांन सुलतान, कास कबिलय मीर धर।।
जंग जुटन जालिम जुझार, भुजसार भार भुअ।
धर धमंकि भजि सेस, गगन रवि लुप्पि रैन हुअ।।
उलटि प्रवाह मान सिन्धु सर, रुक्कि राह अड्डौ रहिय।
तिहि घरी राज प्रथिराज सौं, चन्द बचन इजि विधि कहिय।।

शब्दार्थ :-

साहाबदीन=शहाबुद्दीन गौरी, सुनि=सुनकर, गज्जनै=गजनी, वर=श्रेष्ठ, पुरासांन=खुरासान नामक देश, कास=खस अथवा काशकन्द नामक एक प्राचीन देश, काबिलय=काबुली-काबुल का, मीर=सरदार, धर=सच्चा-पक्का-द ढ़, जंग=युद्ध, जुटन=जुड़ना-लड़ना, जालिम=निर्दयी-क्रूर, जुझार=योद्धा-वीर, भुअ=भू-पथ्वी, भुजसार=लोहे के समान, मजबूत कठोर भुजाएं, भार=भारी-जिम्मेदारी, धर=धरती-पथ्वी, धमंकि=धमकना-डगमगा उठना, भजि=भागना, सेस=शेषनाग, लुप्पि=लुप्त हो जाना-छिप जाना, हुअ=हो जाना, मान=समान- मर्यादा, सर=नदी, रुक्कि=रोक कर, अड्डौ रहिय=अड़ा रहा, तिहि घरी=उसी घड़ी-उसी समय।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌द्य त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का अनुपम वर्णन है। यहाँ कवि ने उस स्थिति का वर्णन किया है जब शहाबुद्दीन गौरी को यह गुप्त सूचना मिलती है कि प थ्वीराज चौहान दिल्ली नहीं है वह थोड़ी सी सेना लेकर समुद्र शिखर गया है अतः उसने इस स्थिति का लाभ उठाकर तत्काल दिल्ली पर आक्रमण कर दिया।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनमोहन चित्रण करता हुआ कहता है कि शहाबुद्दीन गौरी ने यह सूचना सुनी कि प थ्वीराज थोड़ी सी सेना के लेकर समुद्र शिखर की ओर गया है। अतः शहाबुद्दीन ने तत्काल धावा बोल दिया। उसकी विशाल सेना में खुरासान को सुलतान काशकंद तथा काबुल के वीर और प्रमुख सरदार थे। युद्ध में लड़ने के लिए वे बड़े क्रूर, भयंकर लड़ाकू और बड़े विकट भट्‌ट थे। उसकी भुजाएं लोहे के समान मजबूत तथा कठोर थीं, मानो वे प थ्वी के भार को धारण करने में समर्थ थे, अथवा मानो उनकी भुजाएं इतनी भारी थीं कि उनके बोझ से प थ्वी भी धंस जाती थी। जब शहाबुद्दीन की इस भयंकर सेना ने प्रस्थान किया, तो उस भयंकर सेना के चलने से प थ्वी डगमगाने लगी तथा प थ्वी के डगमगाने से शेषनाग भाग खड़ा हुआ। उस विशाल सेना से इतनी धूल उड़ी कि उससे सूर्य भी छिप गया और दिन में ही रात हो गई। अर्थात् धूल के कारण जब सूर्य छिप गया तो रात जैसा अंधेरा हो गया। शहाबुद्दीन की विशाल सेना इस तरह उमड़ती हुई आई कि वह प थ्वीराज का रास्ता रोक कर खड़ी हो गई। ऐसा लगा मानो नदी का प्रवाह उल्टकर समुद्र की तरफ न जाकर पीछे की ओर जा रहा था अथवा मानो समुद्र ने नदी के प्रवाह को रोकर उसे पीछे धकेल दिया हो।

(यहां कवि ने शहाबुद्दीन गौरी की विशाल सेना और उसकी तीव्रता का वर्णन करना चाहा है।) इसलिए कवि ने नदी तथा समुद्र का उदाहरण दिया है। जब समुद्र नदी के जल प्रवाह को रोक देता है और नदी का पानी पीछे लौटने लगता है उस समय पानी की ऊंची ऊंची लहरें उठती हैं, बल्कि सागर और नदी के पानी में टकराव होने लगता है। ऐसी स्थिति में न केवल उथल-पुथल होती है, बल्कि शोर भी होता है। लगभग यही स्थिति बादशाह की सेना की थी। अर्थात् बादशाह की सेना नदी के जल के समान आगे बढ़ रही थी लेकिन प थ्वीराज की थोड़ी सेना ने समुद्र के समान उसकी गति को रोक लिया।

इसका एक अन्य अर्थ यह भी हो सकता है कि शहाबुद्दीन की सेना विशाल समुद्र के समान थी और उसने प थ्वीराज के मार्ग को रोक लिया, लेकिन ये अर्थ तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता, क्योंकि प थ्वीराज तो अपनी सेना के साथ पहले ही समुद्र शिखर पहुंच चुका था और शहाबुद्दीन वहां बाद में पहुंचा।

शहाबुद्दीन गौरी की सेना द्वारा रास्ता रोकने का समाचार सुनकर कवि चन्दबरदाई प थ्वीराज से इस प्रकार कहने लगा।

विशेष :-

(1) परम्परागत काव्य रूढ़ि का पालन करते हुए शहाबुद्दीन गौरी की सेना के चलने तथा धूल उड़ने का वर्णन है। लगभग ऐसा ही अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन महाकवि कालिदास ने 'रघुवंश' में तथा कविवर जायसी ने 'पद्मावत' में किया है।

(2) समुद्र और नदी के रूपक द्वारा प थ्वीराज की सेना और शहाबुद्दीन गौरी की सेना के भिड़ने का आकर्षक और प्रभावशाली वर्णन है।

(3) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(4) कवित्त छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(9) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(11) 'कास कविलय', 'धर धमति' में छेकानुप्रास अलंकार है।

(12) 'जंग जुरन जालिम जुआर' में अनुप्रास अलंकार है।

(13) 'भुजमार भार भुअ' में वृत्यानुप्रास अलंकार है।

[37]

निकट नगर जब जांन, जाय वर बिंद उघय भय।
समुद सिषर घन नद्द, इन्द दुहुं घोर गय।।
अगिवानिय-अगिवान, कुंअर बनि-बनि हय सज्जति।
दिष्वन को त्रिय सबानि, चढ़ि गौष छाजन रज्जति।।
विलषि अवास कुंबरि बदन, मनो राहु छाया सूरत।
झंपति गवष्षि पल-पल पलकि, दिषिति पंथ दिल्लीस पति।।

शब्दार्थ :-

जांन=बरात, वर=श्रेष्ठ, बिंद=दूल्हा (राजस्थान में दूल्हा को बींद' कहते हैं), विद्यमान, उद्यय=दोनों, भय=दुष्ट, घन=घनघोर, नद्द=निनाद-प्रचण्ड घोष, इन्द=राजा, घोर=घनघोर, गय=गति-ढंग, अगिवानिय=अगवानी के लिए, अगिवान=स्वागत, अगवानी करने वाले, कुंअर=राजकुमार, बनि-बनि=बन-ठन कर, सज-संवर कर, हय=घोड़े, सज्जति=सजाकर, दिष्वन को=देखने के लिए, त्रिय सबनि=सारी स्त्रियां, गौष=गौरव, छाजन=छज्जों पर, रज्जति=शोध देने लगीं, बिलषि=बिलख कर, आवास=आवास-राजमहल, कुंबरि=राजकुमारी पद्मावती, बदन=मुख, सुरत=पूरी तरह से, संषति=झींकती, गवष्षि=गवाक्ष-गौरव, पलकि=पलकें उठाकर, दिषिति=देखती, दिल्लीस पति=दिल्लीश्वर पृथ्वीराज।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'पृथ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्धृत हैं। इसमें पृथ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का अनुपम वर्णन है। यहाँ कवि उस स्थिति का वर्णन करता है जब कुमायूं नरेश कुमोदमणि समुद्र शिखर पहुंच जाता है तथा वहीं पृथ्वीराज चौहान भी गुप्त रूप से पहुंच जाता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनमोहक चित्रण करता हुआ कहता है कि जब राजा कुमोदमणि अपनी श्रेष्ठ बारात के साथ समुद्र शिखर नगर के करीब पहुंच गया तब वहां नगर में घनघोर नगाड़े बजने लगे। एक ओर तो कुमोदमणि की सेना नगाड़े बजाकर अपने पहुंचने की सूचना दे रही थी, दूसरी ओर राजा विजय नगाड़े बजाकर कुमोदमणि का स्वागत करने लगा। इसलिए दोनों के नगाड़े बजाने से भयंकर शब्द उत्पन्न होने लगा। बारात की अगवानी के लिए अर्थात् स्वागत

करने के लिए राजकुमार खूब सज-धज कर अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर नगर के बाहर निकले। दूल्हा राजा कुमोदमणि और उसकी श्रेष्ठ बारात को देखने के लिए सब स्त्रियां, गंवाक्ष और छज्जों पर बैठकर सुशोभित होने लगी, परन्तु राजकुमारी कुमोदमणि के आने के समचार को सुनकर अपने महल में रोने लगी। मानो चन्द्रमा पर राहु की छाया पड़ गई हो, अर्थात् राहु ने चन्द्रमा को पूरी तरह से ग्रस लिया हो। वह गवाक्ष में बैठी बार-बार अपनी पलकें उठाकर देखती हुई दिल्ली से अपने वाले मार्ग पर निगाहें लगाकर दिल्ली नरेश प थ्वीराज के आगमन की प्रतीक्षा कर रही थी। कहने का भाव यह है कि पद्मावती यह जानकर अत्यधिक दुःखी होकर बिलखने लगी कि कुमोदमणि बारात के साथ समुद्र शिखर आ पहुचा है। इसी दुःख के कारण उसका मुख ऐसे मुरझा गया जैसे राहु के ग्रसने पर चन्द्रमा कांतिहीन हो जाता है, अतः वह खिड़की में बैठी उसी रास्ते पर देख रही थी जिस रास्ते से दिल्ली नरेश प थ्वीराज चौहान को आना था। इस प्रकार पद्मावती बड़ी उत्सुकता से प थ्वीराज की प्रतीक्षा करने लगी।

विशेष :-

(1) राजा कुमोदमणि की बारात के आगमन और राजा विजय द्वारा स्वागत किए जाने का बड़ा ही सजीव तथा प्रभावशाली वर्णन है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) कवित्त छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(5) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(7) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(10) 'समुद्र सिषर' में छेकानुप्रास अलंकार है।

(11) 'बनि-बनि' में पुनरुक्ति अलंकार है।

(12) 'मनो रात छाया सूरत' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

टिप्पणी -

प्रस्तुत छन्द की पांचवीं पंक्ति में 'सूरत' शब्द का प्रयोग विवादास्पद है। सूरत का अर्थ 'पूरी तरह से' उचित प्रतीत होता है। कुछ टीकाकारों ने सूरत का अर्थ प्रेम से उमंगित माना है जो असंगत है, क्योंकि पद्मावती कुमोदमणि के आने का समाचार सुनकर उमंगित नहीं हो सकती, क्योंकि उसे प थ्वीराज के आने का समाचार ही नहीं मिला। फिर कवि राहु शब्द के प्रयोग द्वारा उसकी स्थिति उस चन्द्रमा के समान बताता है जिसे 'राहु' ने ग्रास लिया है, अतः उसका हृदय प्रेम से उमंगित नहीं हो सकता। हां, वह दुःख के कारण काला अवश्य पड़ गया है। अतः सूरत का अर्थ पूर्व रूप से ही लिया जाना चाहिए।

[38]

विम्मत पंथ दिल्ली दिसांन।
सुष भयौ सूक जब मिल्यौ आन।।
सन्देस सुनह आनन्द नैन।
उमगिय बाल मनमथ्थ सैन।।

शब्दार्थ :-

दिष्पत=देखती है, पंथ=रास्ता, दिसांन=दिशा की ओर, सुष=सुख, सूक=तोता, आनं=आकर, उमंगिय=उमंगित हो गई, बाल=बाला (युवती), मनमथ्य=कामदेव, सैन=सेना।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का अनुपम वर्णन है। यहाँ कवि ने प थ्वीराज का संदेश न मिलने से व्याकुल पद्मावती का चित्रण किया है जो तोते द्वारा प थ्वीराज का संदेश पाकर अत्यन्त आनन्दित हो उठती है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि समुद्र शिखर की राजकुमारी पद्मावती दिल्ली की ओर से आने वाले रास्ते की ओर आंखे लगाकर देख रही थीं, परन्तु जब दिल्ली से लौटकर शुक उससे आकर मिला तो उसे अत्यधिक सुख हुआ, अर्थात् वह तोते को आया देखकर आनन्दित हो उठी। तोते के मुख से प थ्वीराज का संदेश सुनकर उसके नेत्र आनन्द से भर गए। वह युवती राजकुमारी पद्मावती यह समाचार सुनकर इस प्रकार उमंगित हो गई जैसे कामदेव की सेना उमंगित हो जाती है।

यहां यदि 'सैन' शब्द का संकेत किया जाये तो अर्थ इस प्रकार से होगा-कामदेव का संकेत पाकर वह युवती उमंगित हो उठी। अर्थात् उसके मन में प्रेम भावना का उदय हुआ और काम भावना के कारण उसके शरीर के अंग-प्रत्यंग उमंगित हो उठे।

विशेष :-

(1) प थ्वीराज के संदेश को सुनकर पद्मावती पर पड़ने वाले प्रभाव का बड़ा ही सजीव तथा मार्मिक वर्णन है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) पद्धरी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) श्रंगार रस का सुन्दर परिपाक है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(9) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(11) 'दिल्ली दिसांन', 'सन्देस सुनह' में छेकानुप्रास अलंकार है।

[39]

तन चिकट चीर डार्‌यो उतार।
मज्जन मयंक नवसत सिंगार।।
भूषन मंगाय नव सिष अनूप।
सिज सेन मनो मनमथ्य भूप।।

शब्दार्थ :-

तन=शरीर, चिकर=मैल, चीर=वस्त्र, मज्जन=स्नान करना, मयंक=चन्द्रमा, नबयत=नौ ओर सात (अर्थात् सोलह), भूषण=आभूषण, नष'मिष=नख से शिख तक, अनूप=अनुपम, सिज=सजाई है, सेन=सेना, मनमथ्थ=कामदेव, भूप=राजा।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का सुन्दर वर्णन है। यहाँ कवि उस समय का वर्णन करता है जब शुक के मुख से प थ्वीराज का संदेश सुनकर पद्मावती के अंग-प्रत्यंग उमंगित हो गए और वह अपने प्रियतम नायक से मिलने के लिए श ंगार करने लगी।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि प थ्वीराज के संदेश और उसके आने का समाचार सुनकर पद्मावती ने अपने सभी मैले वस्त्रों को उतार दिया। भाव यह है कि पद्मावती यह समाचार न मिलने से पूर्व अत्यधिक निराश थी, उसने मैले वस्त्र धारण कर रखे थे। फिर उसने स्नान किया और चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख पर सोलह श ंगार किया। फिर उसने आभूषण मंगवाकर नख से शिख तक अपना अनुपम रूप धारण किया जिसे देखकर ऐसा लगता था मानो कामदेव ने किसी पर आक्रमण करने के लिए अपनी सेना को सजाया है।

काव्य शास्त्रीय शब्दावली में सोलह श ंगार से सुसज्जित सुन्दर नारी के अंगों को कामदेव की सेना कहा गया है। नारी उसी श ंगार के द्वारा ही पुरुषों पर विजय प्राप्त कर लेती है। इस प्रकार पद्मावती का रूप-सौन्दर्य कामदेव के समान आकर्षित करता है।

विशेष :-

(1) पद्मावती के रूप-सौन्दर्य और श ंगार का बड़ा ही सुन्दर एवं मनोहारी वर्णन है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) पद्धरी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) श ंगार रस का सुन्दर परिपाक है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(9) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(11) 'चिकट चीर', 'मज्जन मयंक', 'सिज सेन' में छेकानुप्रास अलंकार है।

(12) 'सिज सेन मनो मनमथ्थ भूप' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

[40]

सोबन्न बार मोतिन भराय।
सल हल करन्त दीपक जराय।।

संग्रह सषिय लिय सहस बाल।

रुकमनिय जेम लज्जत, मराल।।

शब्दार्थ :-

सोबन्न=स्वर्ण, थार=थाल, भराय=भरकर, हल-हल करन्त=हिलमिल करता हुआ, जराय=जलाकर, संग्रह=साथ, सपिय=सखियों को, सहस=सहस्त्र (हजार), बाल=बाला (पद्मावती), रुकमनिय=रुकमणी, जेम=जैसे, मराल=हंस।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्द्य त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का सजीव एवं मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि उस समय का वर्णन करता है जब पद्मावती को प थ्वीराज के आगमन का संदेश मिल जाता है तथा वह पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार गौरी पूजन के लिए शिव-मन्दिर जाने की तैयारी करने लगती है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि पद्मावती ने सोने के थाल को मोतियों से भर लिया और उसमें झिलमिलाते हुआ दीपक जलाकर रख लिया। कहने का भाव यह है कि पद्मावती ने शिव-मन्दिर जाने की तैयारी आरम्भ कर दी। उसने सोने का थाल मोतियों से भर दिया। उसके जगमगाते हुए दीपक प्रकाश फैला रहे थे। इसके पश्चात् उस बाला अर्थात् पद्मावती ने अपने साथ एक हजार सखियों को ले लिया। जैसे रुकमणि श्रीकृष्ण से मिलने शिव-मन्दिर गई थी। उसी प्रकार पद्मावती हंस की गति को भी लज्जित करते हुए मन्दगति से मन्दिर की ओर चलने लगी। इस प्रकार पद्मावती की चाल अत्यन्त आकर्षक है।

विशेष :-

(1) प थ्वीराज से मिलन की लालसा में मन्दिर जाने से पूर्व पद्मावती द्वारा की जाने वाली तैयारी का सुन्दर वर्णन है।

(2) रुकमणी के साथ दी गई पद्मावती की उपमा अत्यन्त सटीक, सुन्दर और आकर्षक बन पड़ी है।

(3) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(4) पद्धरी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(5) श्रंगार रस का सुन्दर परिपाक है।

(6) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(7) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(8) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(9) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(10) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(11) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(12) 'संग्रह सषिय' में छेकानुप्रास अलंकार है।

(11) 'रुकमनिय जेम लल्जत मराल' में उपमा अलंकार है।

[41]

पूजिय गवहि संकट मनाय।
दच्छिनै अंग कर लगिय पाय।।
फिर देषि देषि प्रथराज राज।
हंस मुद्ध मुद्ध कर पट्ट लाज।।

शब्दार्थ :-

पूजिय=पूजा की, गवरि=गौरी, संकर=शिव, मनाय=मनौती मानकर, दच्छिनै अंग=दाहिनी ओर, लगिय पाय=पैर छूना, देषि देषि=देख देखकर, मुद्ध मुद्ध=मन्द-मन्द, पट्ट=घुंघट, लाज=लज्जा करना।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'पथ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्धृत हैं। इसमें पथ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का सजीव एवं वर्णन है। यहाँ कवि उस स्थिति का वर्णन करता है जब पद्मावती सोलह श्रंगार कर, सोने के थाल में मोतियों को भरकर शिव-मन्दिर में गौरी पूजा के लिए सखियों के साथ पहुंच जाती है, वहीं उसका पथ्वीराज से मिलन होता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि पद्मावती ने अपने मन से मनौती मांगते हुए उमाशंकर की पूजा की। फिर दाहिनी ओर से उनकी प्रदक्षिणा करते हुए उनके चरणों का स्पर्श किया अर्थात् चरण छूकर उसने शिव-पार्वती को प्रणाम किया। इसके पश्चात् बार-बार पथ्वीराज की ओर देखती हुई घूंघट से हल्का-सा मुख ढककर अर्थात् लाज करके मंद-मंद मुस्कुराने लगी। अर्थात् पथ्वीराज को देखकर पद्मावती का मन आनन्दित हो गया।

विशेष :-

(1) सोलहश्रंगार किए हुए पद्मावती के रूप में मुग्धा नायिका का बड़ा सुन्दर और मनोमुग्धाकारी वर्णन है। हल्का-सा घूंघट निकालकर नायक की ओर देखते हुए मंद-मंद मुस्कान भाव-प्रबलता को स्पष्ट करता है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) श्रंगार-रस का सुन्दर एवं आकर्षक परिपाक है।

(3) पद्धरी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(5) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(7) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(10) 'देषि-देषि', 'मुद्ध मुद्ध' में पुनरुक्ति अलंकार है।

टिप्पणी -

अन्तिम पंक्ति में 'कर' के स्थान पर 'चर' पाठभेद मिलता है। तब इसका अर्थ होगा-'शीघ्र' जो कि सही प्रतीत होता है।

[42]

कर पकरि पीठ हय परि चढ़ाय।
लै चल्यौ न पति दिल्ली सुराय।।
भई पबरि नगर बाहिर सुनाय।
पदमावतीय हरि लीय जाय।।

शब्दार्थ :-

कर=हाथ, हय परि=घोड़े पर, न पति=राजा (प थ्वीराज चौहान), सुराय=सुन्दर मार्ग, भई पबरि=खबर, हरि=हरण करना, जीय जाय=ले जा रहा है।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का बड़ा मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि उस समय का चित्रण करता है जब पद्मावती पूर्वनियोजित कार्यक्रम के अनुसार अपनी सखियों के साथ गौरी पूजा के लिए शिव-मन्दिर जाती है वहां प थ्वीराज उसका हरण कर लेता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि जब प थ्वीराज ने पद्मावती को अपनी तरफ मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए देखा तो उसने पद्मावती का हाथ पकड़ कर उसे अपने घोड़े पर चढ़ा लिया। राजा प थ्वीराज उसे अपने साथ लेकर दिल्ली के सुन्दर मार्ग की ओर चल दिया। तत्काल ही (पद्मावती हरण) की यह खबर समुद्र शिखर के भीतर और बाहर फैल गई कि कोई राजा पद्मावती का हरण किए उसे साथ लिए जा रहा है। भाव यह है कि पद्मावती द्वारा भेजे गए संदेश पत्र के अनुसार प थ्वीराज चौहान ने पद्मावती का हरण कर लिया और वह उसे अपने घोड़े पर बिठाकर दिल्ली की ओर चल दिया। इस प्रकार पद्मावत की प थ्वीराज से मिलने की मनचाही इच्छा पूर्ण हो गई।

विशेष :-

(1) पद्मावती हरण का प्रभावशाली वर्णन है।
(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।
(3) पद्धरी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।
(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।
(5) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।
(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।
(7) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।
(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।
(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।
(10) 'पकरी पीठ', में छेकानुप्रास अलंकार है।

टिप्पणी -

कुछ टीकाकारों ने दूसरी पंक्ति में प्रयुक्त 'सुराय' का अर्थ 'श्रेष्ठ राजा' किया है परन्तु यह अर्थ तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता, क्योंकि इससे पूर्व न पति शब्द प्रयुक्त हो चुका है, उसका अर्थ भी राजा है। 'सुराय' शब्द 'सुराह' से बना है जिसका अर्थ सुन्दर राह अर्थात् सुन्दर रास्ता है। यही अर्थ सही प्रतीत होता है। यदि हम सुराय का अर्थ राजा लगायेंगे तो इससे पद्य में पुनराव ति दोष आ जायेगा।

[43]

बाजी सुबंब हय गय पलांन।
दौरे सुसज्जित दिस्सह दिसान।।
तुम्ह लेहु लेहु मुष संपि जोध।
हन्नाह सूर सब पहरि क्रोध।।

शब्दार्थ :-

सुबंब=रणभेरी (युद्ध के नगाड़े), बाजी=बजने लगे, हय=घोड़ा, गय=हाथी, पबांन=जीन (हौंदें कसे जाने लगे), दौरे=दौड़ पड़े, सुसज्जित=अच्छी प्रकार से सजे हुए, दिसांन=सभी दिशाओं से, लेहु लेहु=पकड़ो पकड़ो, मुष=मुख, झंपि=कहते हुए, जोध=योद्धा, हन्नाह=कवच, सूर=शूरवीर।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि ने उस स्थिति का चित्रण किया है जब पद्मावती के हरण का समाचार पाकर राजा समुद्र शिखर और राजा कुमोदमणि की सेनाओं में हलचल मच गई और वे प थ्वीराज को पकड़ने के लिए तैयारियां करने लगे।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि युद्ध के नगाड़े बजने लगे तथा हाथी और घोड़ों की होदें तथा जीने कसी जाने लगी। सभी दिशाओं से सैनिक सुसज्जित होकर दौड़ने लगे। भाव यह है कि प थ्वीराज से युद्ध करने की तैयारी होने लगी। शूरवीर योद्धाओं ने जिरह बखतर धारण कर लिए और वे क्रोधित मुख से 'पकड़ो पकड़ो' कहते हुए दौड़ने लगे। इस प्रकार प थ्वीराज को पकड़ने के लिए सभी सैनिकों में हलचल प्रारम्भ हो गई।

विशेष :-

(1) पद्मावती हरणी के फलस्वरूप हुई प्रतिक्रिया का स्वाभाविक वर्णन है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) पद्धरी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(5) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(7) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(10) 'दिस्सह दिसांन', 'सूर सब', में छेकानुप्रास अलंकार है।

(11) 'लेहु लेहु' में पुनरुक्ति अलंकार है।

[44]

अग्गे जु राज प्रथिराज भूप।
पच्छै सु भयो बस सेन रूप।।
पहुंचे सु जाय तत्ते तुरंग।
भुअ भिरन भूप जुरि जोध जंग।।

शब्दार्थ :-

अग्गे=आगे, भूप=राजा, पच्छै=पीछे, तत्ते=तेज, तुरंग=घोड़े, भुऊ=प थ्वी, किरन=भिड़ने वाले, जुटि=जुड़कर (इकट्ठे होकर), जोध=योद्धा, जंग=युद्ध।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का अनुपम व आकर्षक वर्णन है। यहाँ कवि राजा विजय और कुमोदमणि की सेनाओं द्वारा प थ्वीराज का पीछा किए जाने का वर्णन करता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि महाराज प थ्वीराज पद्मावती को अपने साथ घोड़े पर लिए आगे-आगे चले जा रहे थे। समूद्रशिखर के राजा विजय और कुमोदमणि की सारी सेना उसका पीछा कर रही थी। शीघ्र ही दोनों की सेना के तेज दौड़ने वाले घोड़े प थ्वीराज के समीप जा पहुंचे। फलस्वरूप उस स्थान पर दोनों सेनाओं का भयंकर युद्ध छिड़ गया। अर्थात् राजा विजय और राजा कुमोदमणि की सेना के योद्धा इकट्ठे होकर प थ्वीराज के सैनिकों से भिड़ गये और दोनों पक्षों में युद्ध होने लगा।

विशेष :-

(1) प थ्वीराज तथा राजा विजय और कुमोदमणि की सेनाओं के युद्ध का सजीव वर्णन है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) पद्धरी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(5) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(7) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(10) 'तत्ते तुरंग' में छेकानुप्रास अलंकार है।

(11) 'भुअ भिरन भूप', 'जुरि जोध जंग' में व त्यानुप्रास अलंकार है।

[45]

उलटी जु राज प्रथिराज बाग।
थकि सूर गगन धर धसि नाग।।
सामन्त सूर सब काल रूप।
गहि लोह छोह बाहै सुभूप।।

शब्दार्थ :-

जु=जो-जैसे ही, बाग=घोड़े की लगाम, घोड़े का मुंह, उल्टी=मोड़ी, थकि=थककर, सूर=सूर्य, धर=प थ्वी, नाग=शेषनाग-पहाड, काल रूप=काल के समान भयंकर बन, गहि=पकड़ कर, लोह=लोहा-हथियार, छोह=उत्साह, बाहै=घालने-चलाने लगे, सुभूप=राजा।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌द्य त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का सजीव व आकर्षक वर्णन है। यहाँ कवि उस स्थिति का वर्णन करता है जब शत्रु प थ्वीराज चौहान का पीछा करते हुए उसके पास पहुंच गये, तब प थ्वीराज उनका सामना करने के लिए उलट पड़े।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि जैसे ही प थ्वीराज ने अपने घोड़े की लगाम को मोड़ा, अर्थात् घोड़े की लगाम खींच कर आगे बढ़ने की बजाय पीछे मुड़ा, वैसे ही मानो सूर्य आसमान में थककर रुक गया। डर के मारे प थ्वी धंसने लगी और शेषनाग बेचैन हो गये। कवि के कहने का भाव है कि भयंकर युद्ध होने की आशंका के कारण सूर्य मानो आकाश में थम-सा गया। प थ्वी को धारण करने वाला शेषनाग व्याकुल हो गया और प थ्वी डगमगाने लगी। प थ्वीराज से सभी सामंत और शूरवीर सैनिक काल जैसा भयंकर रूप धारण करके शत्रु का सामना करने लगे। श्रेष्ठ राजा प थ्वीराज लोहे की तलवार हाथ में लेकर शत्रुओं पर वार करने लगे। कवि के कहने का भाव यह है कि प थ्वीराज से सभी योद्धा पीछे मुड़कर साक्षात् मौत का रूप धारण कर शत्रुओं पर टूट पड़े। उधर प थ्वीराज भी उत्साहपूर्वक शत्रुओं पर टूट पड़े। इस प्रकार प थ्वीराज और उसके सैनिक शत्रु सेना के सामने यम के दूतों के समान डटे हुए थे।

विशेष :-

(1) प थ्वीराज और उसकी सेना की वीरता का बड़ा ही प्रभावशाली वर्णन है।
(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।
(3) पद्धरी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।
(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।
(5) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।
(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।
(7) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।
(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।
(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।
(10) 'धर धसज' में छेकानुप्रास अलंकार है।

(11) 'सामन्त सुर सब' में व त्यानुप्रास अलंकार है।

(12) पूरे छन्द में अतिशयोक्ति अलंकार है।

[46]

कम्मान बांन छुट्टहिं अपार।
लगत लोह इम सारघार।।
घमसान घान सब बीर षेत।
घन श्रोत कहत अरु रक्त रेत।।

शब्दार्थ :-

कम्मान=कमान (धनुष), बांन=बाचा, अपार=असंख्य, लोह=बाणों के आगे लगे लोहे के फलक, इम=इस प्रकार, सारघाट=तलवार की धार, धान=युद्ध, षेत=युद्ध क्षेत्र (युद्ध में मारे गये), घन=घना, श्रोत=रक्त (खून), अरू=और, रक्त=लाल, रेत=भूमि।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि ने दोनों सेनाओं के मध्य हुए घमासान युद्ध का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि प थ्वीराज और राजा विजय तथा कुमोदमणि की सेनाओं में भयंकर युद्ध होने लगा। युद्ध क्षेत्र में दोनों ओर धनुषों के असंख्य बाण छूटने लगे। उन बाणों के आगे लगी लोहे के फलकें शत्रुओं के शरीर को तलवार की तीखी धार के समान काटती चली जा रही थी। उस स्थान पर इतना भयंकर युद्ध हुआ कि (प थ्वीराज के शत्रुओं के) सारे वीर योद्धा युद्ध में मारे गये। उस युद्ध क्षेत्र में खून की नदी बहने लगी और धरती उस खून में भींग कर लाल रंग की हो गई। इस प्रकार प थ्वीराज ने बड़ी वीरता और साहस के साथ शत्रु सेना का संहार किया। इसकी भयावता का अनुमान धरती के खून से लाल होने से लगाया जा सकता है।

विशेष :-

(1) दोनों सेनाओं के मध्य होने वाले युद्ध का सजीव वर्णन है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) पद्धरी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) भयानक रस का सुन्दर परिपाक है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(9) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(11) 'लगत लोह', 'घमसान घान' में छेकानुप्रास अलंकार है।

टिप्पणी -

दूसरी पंक्ति में प्रयुक्त 'सारघार' का अर्थ धारा सार, मूसलाधार वर्षा भी किया गया है। तब हम उसका अर्थ कर सकते हैं-बाणों की मूसलाधार वर्षा हो रही थी।

[47]

मारे बरात के जोध जोह।
परि रुंड मुंड अरि षेत सोह।।

शब्दार्थ :-

जोध=योद्धा, जोह=देख-देख कर, ढूंढ-ढूंढ कर, रुंड=कबन्ध, सिर कटा हुआ शरीर-केवल धड़, मुंड=मस्तक-सिर, अरि=शत्रु, षेत=रणक्षेत्र, सोह=शोभा देते।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि युद्ध की भयंकरता का चित्रण करता है जिसमें प थ्वीराज ने शत्रु पक्ष के सभी सैनिक योद्धाओं को मौत के घाट उतार दिया।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि प थ्वीराज ने कुमोदमणि की बारात के सभी योद्धाओं को ढूंढ-ढूंढ का मार डाला, अर्थात् कुमोदमणि की बारात के सभी सैनिक योद्धा उस युद्ध में मारे गये। उनके कटे हुए धड़ और सिर उस युद्ध क्षेत्र में सुशोभित हो रहे हैं। अन्य प्रकार से हम यह अर्थ भी कर सकते हैं कि शत्रुओं के कटे सिरों और धड़ों से भरा युद्ध क्षेत्र सुशोभित हो रहा था। इस प्रकार प थ्वीराज चौहान ने शत्रु पक्ष की सारी सेना का संहार कर दिया।

विशेष :-

(1) युद्ध की भयंकरता का यथार्थ वर्णन है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) पद्धरी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) भयानक रस का सुन्दर परिपाक है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(9) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(11) 'जोध जोह' में छेकानुप्रास अलंकार है।

[48]

परे रहत रिनषेत अरि, करि दिल्लिय मुख रुब्ब।
जीत चल्यौ प्रथिराज रिन, सकल सूर भय सुब्ब।।

शब्दार्थ :-

रिनषित=युद्ध क्षेत्र (रण क्षेत्र), अरि=शत्रु, दिल्लिय=दिल्ली की ओर, मुख=मुख, रुष्ष=रूख, रिन=रण (युद्ध), सकल=सारे, सूर=युद्ध, भय=हुए, सुक्ष्ष=सुख (प्रसन्नता)।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि ने उस समय का वर्णन किया है जब युद्ध क्षेत्र में विजय प्राप्त कर प थ्वीराज चौहान प्रसन्नतापूर्वक दिल्ली की ओर प्रस्थान करता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि राजा विजय और कुमोदमणि तथा उसके सभी शत्रु सैनिक युद्ध क्षेत्र में मरे पड़े थे। उन्हें छोड़कर प थ्वीराज ने (पद्मावती के साथ) दिल्ली की ओर मुख किया, अर्थात् उन्होंने दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। युद्ध क्षेत्र में प थ्वीराज विजय प्राप्त करके चल दिया और उसके सभी योद्धा आनन्दित हो उठे, अर्थात् सभी योद्धाओं को इस बात की प्रसन्नता हुई कि वे युद्ध क्षेत्र में विजय प्राप्त कर दिल्ली जा रहे हैं।

प्रथम पंक्ति के अन्तिम अंश का एक अन्य अर्थ भी हो सकता है, वह अर्थ इस प्रकार होगा - शत्रुओं के मरे हुए योद्धा दिल्ली की ओर मुख करे हुए मरे पड़े थे। इसका भाव है कि वे योद्धा इतने वीर योद्धा थे कि उन्होंने युद्ध क्षेत्र में अपनी पीठ नहीं दिखाई। वे युद्ध करते हुए निरन्तर आगे बढ़ते रहे। भले ही वे युद्ध में मारे गये, लेकिन उन सभी के मुख दिल्ली की ओर थे, क्योंकि वे प थ्वीराज का पीछा करते हुए निरन्तर दिल्ली की तरफ बढ़ रहे थे। इस दूसरे अर्थ से राजा विजय और कुमोदमणि के योद्धाओं की शूरवीरता का पता चलता है।

विशेष :-

(1) प थ्वीराज की विजय का सुन्दर वर्णन है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) दोहा छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) भयानक रस का सुन्दर परिपाक है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(9) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(11) 'रहत रिनषेत', 'सकल सूर' में छेकानुप्रास अलंकार है।

[49]

पदमावति इम लै चल्यौ, हरिषि राज प्रथिराज।
एतें परिं पतिसाह की, भई जु आनि अवाज।।

शब्दार्थ :-

इम=इस प्रकार, लै चल्यौ=ले चला, हरिषि=प्रसन्न होकर, एतें परि=इतने में ही (उसी समय), पतिसाह=बादशाह (शहाबुद्दीन गौरी), आनि=आकर (आने का), अबाज=शब्द (ललकार, समाचार)।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि उस समय का वर्णन करता है जब प थ्वीराज चौहान विजय और कुमोदमणि की सेनाओं को पराजित करके दिल्ली की ओर बढ़ रहा था तो उसे शहाबुद्दीन गौरी के हमले की सूचना मिलती है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि राजा कुमोदमणि तथा राजा विजय के साथ हुए युद्ध में विजय प्राप्त करने के पश्चात् प थ्वीराज का मन प्रसन्न हो गया और इस प्रकार वह पद्मावती को साथ लेकर दिल्ली की ओर बढ़ने लगा। लेकिन इसी बीच बादशाह शहाबुद्दीन गौरी की आवाज अर्थात् उसकी सेना के नगाड़ों की आवाज सुनाई दी। कवि के कहने का भाव है कि गौरी ने प थ्वीराज पर हमला कर दिया था, इसका समाचार प थ्वीराज को मिल गया। इस प्रकार शहाबुद्दीन गौरी ने राजनीतिज्ञ कूटनीति से समय का लाभ उठाकर प थ्वीराज चौहान पर आक्रमण कर दिया।

विशेष :-

(1) यहाँ शहाबुद्दीन गौरी द्वारा प थ्वीराज पर किए गए आक्रमण की सूचना दी गई है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) दोहा छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) वीर-रस का सुन्दर परिपाक है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(9) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(11) 'परि पतिसाह' में छेकानुप्रास अलंकार है।

[50]

भई जु आनि अबाज, आय साहाबदीन सुर।
आज गहौ प्रथिराज, बोल बुल्लंत गज्जत घुर।।
व्योघ जोधा अनन्त, करिय पंती आनि गज्जिय।
बानं नालि हथनालि, तुपक तीरह स्रब सज्जिय।।
पब्बै पहार मानो सार के, गिरि भुजा गजनेस बल।
आप्त हकारि हंकार करि, घुरासान सुलतान दल।।

शब्दार्थ :-

अबाज=शब्द (ललकार, समाचार), आय=आया-आकर, सुर-असुर=यहां मुसलमान से अभिप्राय है। गहौं=पकड़ूं, बोल=वचन, बुल्लंत=बोलता हुआ, गज्जत=गर्जना करता, धुर=पुरी तरह से, निश्चय ही, जोधा=योद्धा, अनन्त=असंख्य, करिय=हाथियों की, पंती=कतार-पंक्ति, आनि=आकर, गज्जिय=गर्जना करने लगी, बांन=तोप, नालि=बन्दूक-छोटी तोप, हथनालि=हाथियों द्वारा खींची जाने वाली बड़ी तोप, तुपक=लम्बी नाल वाली बन्दूक-कड़ाबीन-तोड़ेदार बन्दूक, तीरह=तीर, सब=सब, सज्जिय=सजा कर, पब्बे=पवि-वज्र चलते हैं, सार=लोहा, भिरि=भिड़कर-मुठभेड़, भुजानं=भुजाओं से, गजनेस=गजनीश-गजनी का राजा-शहाबुद्दीन गौरी, हकारि=बुलाए, हकार=हुंकार, षुरासान=खुरासान, दल=सेना।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। जब प थ्वीराज राजा विजय और कुमोदमणि की सेनाओं को पराजित करके दिल्ली की ओर पद्मावती के साथ बढ़ रहा था, उसी समय शहाबुद्दीन की विशाल सेना ने प थ्वीराज पर आक्रमण कर दिया। यहां कवि शहाबुद्दीन गौरी की विशाल शक्तिशाली सेना का वर्णन करता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि जैसे ही शहाबुद्दीन गौरी की आवाज अथवा उनी सेना के नगाड़ों की आवाज (ललकार) प थ्वीराज तक पहुंची, वैसे ही वह बादशाह गौरी स्वयं अपनी सेना लेकर वहां पहुंच गया। वह गौरी ऊंचे स्वर में गरजता हुआ कह रहा था कि आज मैं अवश्य प थ्वीराज को पकड़ लूंगा। भाव यह है कि गौरी प थ्वीराज को पकड़ने का निश्चय करके आया था। उसकी विशाल सेना में क्रोध से भरे अनेक योद्धा थे। बादशाह की हाथियों की सेना की पंक्तियां वहां पहुंच कर गर्जना करने लगी, अर्थात् उसके हाथी जोर-जोर से चिंघाड़ने लगे। गौरी की सेना के सभी योद्धा तोपों, छोटी तोपों, हाथियों द्वारा खींचे जाने वाली बड़ी तोपों, तोड़ेदार तोपों तथा धनुष बाण से सुसज्जित थे। कवि के कहने का भाव यह है कि शहाबुद्दीन की विशाल सेना के पास सभी तरह के अस्त्र-शस्त्र थे। सारी सेना जिरह-बख्तर से सजी हुई युद्ध क्षेत्र में आगे बढ़ती ऐसे लग रही थी मानो लोहे के पहाड़ आगे बढ़े जा रहे हों, वे सभी योद्धा अपने स्वामी गजनेश (गौरी) का बल अपनी भुजाओं में भरकर युद्ध करने के लिए व्याकुल हो उठे। कहने का भाव यह है कि शहाबुद्दीन अपनी सेना के साथ इसलिए था ताकि सैनिकों का मनोबल बराबर बना रहे और वे साहसपूर्वक युद्ध लड़ते रहे। बादशाह गौरी द्वारा बुलाई गई खुरासान के बादशाह की सेना हुंकार करती हुई वहां आ पहुंची थी, अर्थात् खुरासानी सेना क्रोधित होकर शोर करती हुई वहां पहुंच गई थी। इस प्रकार शहाबुद्दीन गौरी अपने पूरे सैन्यबल के साथ प थ्वीराज से लड़ने के लिए व्याकुल है।

विशेष :-

(1) शहाबुद्दीन गौरी की विशाल तथा शक्तिशाली सेना का यथार्थपरक और प्रभावशाली वर्णन है।

(2) युद्ध के विभिन्न अस्त्र-शस्त्रों का विस्त त वर्णन है।

(3) 'तुपक'शब्द तोड़ेदार बन्दूक के लिए हुआ है, जो यह सिद्ध करता है कि प थ्वीराज के समय में बन्दूकों का प्रयोग होने लगा था।

(4) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(5) कवित्त छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(6) वीर तथा भयानक रस का सुन्दर परिपाक है।

(7) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(8) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(9) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(10) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(11) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(12) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(13) 'आनि अबाज', 'बोल बुल्लंत', 'तुपक तीरह', 'भिटि भुजा', 'हकारि हंकार' में छेकानुप्रास अलंकार है।

(14) 'पब्बै पहार मानो सार के' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

टिप्पणी -

'प थ्वीराज रासो' की कुछ पंक्तियों में इस छन्द की तीसरी पंक्ति में 'करिय' शब्द का प्रयोग नहीं मिलता। उस स्थिति में अर्थ इस प्रकार होगा-योद्धाओं की असंख्य पंक्तियां गर्जना कर रही थीं। कुछ सीमा तक सही भी हो सकता है क्योंकि यह सम्भव है कि गौरी की सेना में हाथी न हों, क्योंकि अफगानिस्तान में हाथी नहीं के बराबर हैं।

[51]

घुरासान सुलतान षंधार मीरं।
बलक सो बलं तेग अच्चूक तीरं।।
रुहंगी फिरंगी हलबी समानी।
ठटी ठट्ठ बल्लोच ढालं निसानी।।

शब्दार्थ :-

घुरासान=खुरासान (अफगानिस्तान के पास का एक राज्य), सुलतान=बादशाह, षंधार=कन्यार (प्राचीन काल का गंधार राज्य), मीरं=मीर (सरदार), बलक=बलख (मध्य एशिया का नगर विशेष), बलं=सेना (शक्ति से युक्त), तेग=तलवार, अच्चूक=न चूकने वाला, रुहंगी=तुर्क जाति के, फिरंगी=यूरोपीय (यूरोप के निवासी), हलबी=हलब (आधुनिक सीरिया के निवासी), समानी=सम्मान वाले (अभिमानी), ठटी-ठट्ठ=झुंड के झुंड, बल्लोच=बलूचिस्तानी, ढालं=ढाल, निसानी=झण्डे (पताका)।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि ने शहाबुद्दीन गौरी की सेना में शामिल विभिन्न जातियों के योद्धाओं की युद्ध कला की दक्षता का वर्णन किया है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि शहाबुद्दीन की सेना में खुरासान के सुलतान, कन्धार के सरदार (मीर) तथा कलख के बलशाली यौद्धा थे। जो बड़ी ताकत के साथ तलवार चलाते थे और उनके तीरों के निशाने बड़े अचूक थे। कहने का भाव है कि ये

सभी योद्धा निशाने पर तीर चलाते थे और भयंकर युद्ध करने में दक्ष थे। विभिन्न जातियों के बलोच सेना के झुंड के झुंड अपनी ढाल और कबीले की ध्वजाएं लिए उनके साथ चल रहे थे। भाव यह है कि गौरी की सेना में विभिन्न जातियों तथा विभिन्न क्षेत्रों के योद्धा सम्मिलित थे। इस प्रकार युद्ध कला में निपुण गौरी की सेना युद्ध करने के लिए तत्पर थी।

विशेष :-

(1) शहाबुद्दीन गौरी की सेना में विभिन्न देशों के सैनिक शामिल हैं।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) पद्धरी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) वीर रस का सुन्दर परिपाक है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(9) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(11) 'ठटी ठट्ट' में छेकानुप्रास अलंकार है।

[52]

मंजारी चषी मुष्ष जंबुक्क लारी।
हजारी हजारी इकै जोध भारी।।
तिनं, पष्षरं पीठ हय जीन सालं।
फिरंगी कती पास सुकलात नालं।।

शब्दार्थ :-

मंजारी=दिल्ली-मार्जारी, चषी=आंख वाले, मुष्ष=मुख, जुब्बुक्क=जम्बुक, सियार=गीदड़, लारी=लोमड़ी, हजारी=एक हजार सैनिकों का नायक, एक-एक योद्धा एक-एक हजार सैनिकों के बराबर बलशाली, इकै=एक ही, जोध=योद्धा, तिनं=उनके ऊपर, पष्षट=पाखर-लोहे की कड़ियों वाली हाथी घोड़ों की झूलें, हय=घोड़े, सालं=सजे हुए-अलंकृत, फिरंगी=विलायती-यूरोप में बनी, कती=छुरी-कटारी, पास=पाश-फन्दा, सुफलात=फलात देश की, नालं=बन्दूक की नलि।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌घ त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि ने शहाबुद्दीन गौरी की सेना में सम्मिलित विभिन्न प्रकार के योद्धाओं तथा उनके अस्त्र-शस्त्रों का वर्णन है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि शहाबुद्दीन गौरी की सेना में बिल्ली की-सी आंखों वाले तथा गीदड़ और लोमड़ी जैसे मुखों वाले अनेक योद्धा थे। इनमें से भी एक-एक योद्धा एक-एक हजार सैनिको का नायक था और वह अकेला एक हजार सैनिकों पर भारी पड़ता था। कहने का भाव है कि यह एक हजारी योद्धा एक हजार सैनिकों

को पराजित करने की शक्ति रखता था। उन सैनिकों के घोड़े के पीठ पर लोहे की पाखरें थीं, अर्थात् लोहे के जिरह-बख्तर उनके घोड़ों की पीठ पर पड़े थे तथा उन पर जीन कसी हुई थीं। उन योद्धाओं के पास विलायती तलवारें, फंदे तथा सुन्दर कलात देश की बनी हुई नालें (बन्दूकें) थीं। इस प्रकार शहाबुद्दीन की सेना का प्रत्येक सैनिक उस समय के आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित था।

विशेष :-

(1) विभिन्न अस्त्रों-शस्त्रों से सुसज्जित शहाबुद्दीन गौरी की सेना का यथार्थपरक वर्णन है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) पद्धरी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) वीर-रस का सुन्दर परिपाक है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(9) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(11) 'हजारी हजारी' में पुनरुक्ति अलंकार है।

(12) 'पष्पटं पीत' में छेकानुप्रास अलंकार है।

[53]

जहां बोग बांध मसरी रिछोटी।
घनं सार संमेह अरु चौरं झौटी।।
एराकी अरब्बी पठी तेज ताजी।
तुरक्की महावांन कम्मान बाजी।।

शब्दार्थ :-

बाग=लगाम, बांध=बांधी गई थी, मसरी=मरोड़कर, रिछोटी=मोतियों की माला, घनं=अत्याधिक (सघन), सार=लोहा, चौरं=यौवन, झौरी=गुच्छेदार (छौरदार), एराकी=इराकी देश की, अरब्बी=अरब देश की, पठी=एक विशेष जाति के तेज दौड़ने वाले घोड़े, ताजी=घोड़े, तुरक्की=तुर्की, महाबांन=घोड़ों की एक जाति विशेष, बाजी=घोड़े।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि ने शहाबुद्दीन गौरी की सेना में शामिल विभिन्न देशों के विभिन्न प्रकार के घोड़ों का हृदयाकर्षक वर्णन किया है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि जिस स्थान पर उन घोड़ों की लगामें बंधी हुई थीं, उस स्थान पर लगाम की रस्सी को मरोड़ कर मजबूती के साथ बनाई

गई थी, ताकि लगाम टूट न सके। उन लगामों में मोतियों की मालायें भी गूंथी हुई थीं। उन लगामों में मजबूत लोहे की जंजीरें पड़ी रहती थीं। उन घोड़ों की गर्दन के तथा पूंछ के बाल लम्बे गुच्छेदार चवर के समान थे। यहां कवि ने दो तथ्यों की ओर संकेत किया है। प्रथम तथ्य तो यह है कि घोड़ों की लगाम का एक भाग उनके मुंह में रहता है, वह लोहे की जंजीरों से बना रहता है। यहं कवि उसी तरह की लगाम की मजबूती का वर्णन कर रहा है। दूसरा तथ्य है कि - घोड़ों की गर्दन के तथा पूंछ के बाल लम्बे, घने तथा चवर के समान गच्छेदार थे।

गौरी की सेना के घोड़ों में इराकी, अरबी, पठानी, ताजि, तुर्की, महाबानी तथा कम्मानी अर्थात् विभिन्न देशों और जातियों के तेज दौड़ने वाले घोड़े थे। इस प्रकार शहाबुद्दीन की सेना में विभिन्न देशों के विभिन्न श्रेष्ठ नसलों के घोड़े शामिल थे।

विशेष :-

(1) शहाबुद्दीन गौरी की सेना के विभिन्न नस्लों और जातियों के घोड़ों का सुन्दर वर्णन है।

(2) पद्धरी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(3) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(5) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(7) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(10) 'बाग बांध', 'सार समूह', 'तेज ताजी' में छेकानुप्रास अलंकार है।

[54]

ऐसे असिव असवार अग्गेल गोलं।
भिरे जूनव जेते सुतते अमोलं।।
तिनं मद्धि सुलतान साहाष आयं।
इसे रूप सों फौज बरनाय गायं।।

शब्दार्थ :-

असिव=प्रचंड, असवार=घुड़सवार, अग्गेल=अग्रगामी, गोलं=समूह (झुण्ड), भिरे-भिड़ गए, जून=योद्धा, जेते=जितने भी, सुतते=उत्साही, अमोलं=बहुमूल्य, तिनं=उनके, मद्धि=बीच में, आयं=आया, इसे=इस, बरनाय=वर्णन किया, गायं=गाथा।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि विभिन्न प्रकार के घोड़ों के वर्णन के बाद इन घोड़ों पर सवार घुड़सवारों का चित्रण करता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि शहाबुद्दीन गौरी की सेना के अगले भाग में इस प्रकार के प्रचंड घुड़सवार योद्धा समूह बांधकर (गोल कर) चल रहे थे, अर्थात्

वे छोटी-छोटी टुकड़ियों बनाकर चल रहे थे। वे युद्ध में जोशीले तथा बहुमूल्य रत्नों के समान थे। ऐसे प्रचंड योद्धाओं के बीच स्वयं बादशाह विद्यमान था। कवि कहता है कि इस रूप में बादशाह की उस सेना का वर्णन किया जा सकता है। कहने का भाव है कि बादशाह शहाबुद्दीन गौरी समूची सेना के मध्य में था और उसकी सेना आगे बढ़ती जा रही थी। इस प्रकार शहाबुद्दीन ने चक्रव्यूह के समान अपनी सैन्य रणनीति बनाई हुई थी।

विशेष :-

(1) शहाबुद्दीन के प्रचंड योद्धाओं का आकर्षक वर्णन है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) पद्धरी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) वीर-रस का सुन्दर परिपाक है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(9) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(11) 'असिव असवार अग्गेल' में व त्यानुप्रास अलंकार है।

(12) 'जून जेते' में छेकानुप्रास अलंकार है।

टिप्पणी -

(1) पहली पंक्ति में 'असिव' का 'असि' पाठभेद मिलता है, परन्तु यहां असिव शब्द ही तर्कसंगत है जिसका अर्थ है अशिप या अमंगलकारी, अर्थात् वे योद्धा अत्यन्त भयानक एवं प्रचंड थे। शत्रुओं के लिए तो वे निश्चय से ही अमंगलकारी माने जायेंगे।

(2) दूसरी पंक्ति में 'जून' का पाठभेद 'भूप' मिलता है। भूप का अर्थ है-राजा। पर यह तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता, क्योंकि भूप तो केवल शहाबुद्दीन गौरी था।

[55]

तिनं घेरियं घेरियं राज प्रथिराज राजं।
चिहीं ओर घनघोर नीसान बाजं।।

शब्दार्थ :-

तिनं=उन्होंने, घेरियं=घेर लिया, राज=सुशोभित हुए, चिहीं=चारों, घनघोर=भयंकर, नीसानं=नगाड़े, बाजं=बजने लगे।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि उस समय का चित्रण करता है जब प थ्वीराज राजा विजय तथा कुमोदमणि की सेनाओं को पराजित कर पद्मावती को साथ लेकर दिल्ली की ओर बढ़ रहा था तब शहाबुद्दीन की विशाल सेना ने प थ्वीराज को चारों ओर से घेर लिया।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि (शाहाबुद्दीन की विशाल एवं प्रचण्ड) सेना ने वहाँ पहुँच कर प थ्वीराज को चारों ओर से घेर लिया। इस प्रकार प थ्वीराज चारों ओर से शत्रुओं द्वारा घिरे हुए सुशोभित होने लगे। चारों ओर से युद्ध के भयंकर नगाड़े बजने लगे अर्थात् दोनों ओर की सेनाओं ने युद्ध की घोषणा कर दी।

विशेष :-

(1) प थ्वीराज चौहान शत्रुओं द्वारा चारों ओर से घिर जाने पर भी चिन्तित नहीं हुए। 'राज शब्द इसी भाव का आकर्षक रूप है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा को व्यंजित करता है।

(3) वीर-रस का सुन्दर परिपाक है।

(4) पद्धरी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(9) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

[56]

जिय घोर निसांन, रांन चहुंवान चहौं दिसि।
सकल सूर सामन्त, समरि बल जंत्र मंत्र तिसि।।
उद्दिठ राज प्रथिराज, बाग मनौं लग वीर नट।
पढ़त तेग मन बेग, लगत मनो बीजु झट्ट घट।।
थकि रहे सूर कौतिग गिगन, रगन मगन भई श्रोन हर।
हर हरषि वीर जग्गे हुलस, हुरव रंगि नव रत्त वर।।

शब्दार्थ :-

घोर=घनघोर, निसांन=नगाड़े, रांन=राजा-राज, सकल=समस्तसारे, सूर=वीर, समरि=स्मरण कर, बल=शक्ति जंत्र-मंत्र=जादू-टोना, तस=उसका, बाग=लगाम, लग=लगती है, कठत=निकलती है, तेग=तलवार, बेग=गति-तेजी से, मनो=मानो, बीजु=बिजली, झट्ट=झट-तुरन्त, घट=घटा-मेघों की घटा, सूर=सूर्य, गिगन=गगन-आकाश, कौतिग=कौतुक-तमाशा, रगन-मगन=सराबोर हो उठना-पूरी तरह से भर जाना, श्रोन=रक्त, छर=छरती, हर=शिव, हरषि=हर्षित-प्रसन्न होकर, जग्गे=जाग उठे, हुलस=प्रसन्न होकर, हुरव=हुंकार, नव=नवीन, रत्त=रक्त, वर=श्रेष्ठ।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का सजीव व सुन्दर वर्णन है। यहाँ कवि उस स्थिति का चित्रण करता है जब प थ्वीराज राजा विजय तथा कुमोदमणि की सेना को पराजित करके पद्मावती को साथ लेकर दिल्ली की ओर बढ़ रहे थे। तब शहाबुद्दीन की विशाल सेना ने प थ्वीराज चौहान को चारों ओर से घेर लिया। यहां कवि दोनों

ओर की सेनाओं के मध्य होने वाले युद्ध में प थ्वीराज के अदम्य उत्साह, साहस तथा युद्ध कौशल पर प्रकाश डालता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि महाराज प थ्वीराज चौहान के चारों ओर युद्ध के नगाड़े भयानक स्वरों के साथ बज रहे थे। उनके सभी वीर सामन्त भी अपने अपने बल तथा युद्ध कौशल को याद करके युद्ध करने के लिए तैयार हो गये। भाव यह है कि उन वीर योद्धाओं ने युद्ध लड़ने की युक्तियों को याद किया और वे अपनी सम्पूर्ण शक्ति तथा बल के साथ युद्ध करने के लिए तत्पर हो गए। उनको गौरी की सेनाओं का किसी प्रकार का भय नही था। स्वयं को तथा अपने योद्धाओं को चारों ओर से शत्रुओं से घिरा हुआ देखकर प थ्वीराज उत्साह तथा क्रोध से अपने घोड़ पर सवार हो गये और घोड़े की लगाम को पीट नट के कौशल के समान अपने हाथ से पकड़ लिया। यहां कवि यह स्पष्ट करना चाहता है कि योद्धा घोड़े पर सवार होकर एक हाथ से घोड़े की लगाम को थाम लेता है और दूसरे हाथ में तलवार पकड़ लेता है। ऐसे अवसर पर उनमें नट की-सी कुशलता होनी चाहिए। (जैसे नट भी अपने सधे हुए पैरों से दोनों हाथों में बांस पकड़कर जब रस्सी पर चलता है तो उसे बड़ी सावधानी के साथ अपना यह काम करना होता है। थोड़ी से असावधानी उसके प्राणों के लिए घातक सिद्ध हो सकती है। लगभग यही स्थिति एक योद्धा की भी होती है। उसे भी बड़ी कुशलतापूर्वक घोड़े पर सवार होना होता है। विशेषकर उसे घोड़े की लगाम के संकेतों से इधर-उधर दौड़ाना होता है। इसलिए कवि ने प थ्वीराज के कौशल की तुलना नट के कौशल के साथ की है। भाव यह है कि घोड़ा प थ्वीराज के इशारों पर युद्ध-क्षेत्र में इधर-उधर दौड़ने लगबा। प थ्वीराज की तलवार मन के वेग के समान शीघ्रता से म्यान के बाहर निकली। संसार में मन की गति सर्वाधिक तीव्र मानी जाती है। कवि ने यहां तलवार की तीव्रता की तुलना मन की गति से की है। इसलिए भाव यह है कि उसकी तलवार तत्काल म्यान से बाहर निकल आई।

जब प थ्वीराज ने म्यान से अपनी तलवार बाहर निकाली तो ऐसा लगा मानो बादलों के समूह में बिजली चमक रही हो। यहां कवि ने म्यान को मेघघटा के समान बताया है तथा तलवार को बिजली के समान। इसका एक अन्य अर्थ यह भी हो सकता है कि प थ्वीराज की तलवार मन की गति के समान म्यान से बाहर निकली और वह शत्रुओं का संहार इस प्रकार से करने लगी जैसे बिजली मेघ घटाओं को चीरती है। अर्थात् प थ्वीराज शत्रुओं का अपनी तलवार से संहार करने लगे।

प थ्वीराज चौहान की इस वीरता एवं अद्‌भुत युद्ध कौशल को देखकर सूर्य भी मानो आकाश में आश्चर्यचकित होकर थक गया।, अर्थात् वह चलना भूलकर अपने स्थान पर खड़ा का खड़ा रह गया। इस युद्ध क्षेत्र में योद्धाओं का इतना खून बहा कि वहां सारी प थ्वी खून में डूब गई, अर्थात् युद्ध में हुई मार-काट से खून की नदी बहने लगी। कवि पुनः कहता है कि उस युद्ध को देखकर भगवान शंकर के वीर (गण) प्रसन्न होकर उल्लसित हो उठे। उत्तेजना के कारण उनके मुख नये लाल रंग से भर गए और वे प्रसन्नतापूर्वक हुंकारने लगे। भाव यह है कि युद्ध की उत्तेजना के कारण उनके मुख लाल हो गये और उनके मुख से हुंकार उत्पन्न होने लगी। इस प्रकार प थ्वीराज अदम्य उत्साह, साहस तथा वीरता के साथ शत्रुओं का संहार करता रहा।

विशेष :-

(1) प थ्वीराज की युद्ध वीरता तथा अद्‌भुत युद्ध कौशल का यथार्थपरक वर्णन है।

(2) दूसरी पंक्ति में जंत्र-मत्र का प्रयोग जादू-टोने के लिए नहीं हुआ बल्कि उन युक्तियों,

रीतियों और युद्ध कला से है जिनको युद्ध-क्षेत्र में एक कुशल योद्धा द्वारा प्रयोग में लाया जाता है।

(3) छन्द की अन्तिम पंक्ति ने यह स्पष्ट किया है कि युद्ध क्षेत्र में चारों ओर रक्त तथा लाशों को देखकर शिव के गण अर्थात्-भूत-प्रेत पिशाच आदि मुर्दों का मांस खाने की खुशी में उल्लासित होकर हुंकार करने लगे। इसी प्रकार का वर्णन कविवर ने भी शिवा बावनी में किया है।

(4) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(5) कवित्त छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(6) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(7) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(8) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(9) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(10) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(11) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(12) 'सकल सूर सामन्त' में व त्यानुप्रास अलंकार है।

(13) 'बाग मनों लग वीर नट', 'लगत मनों बीजु सट्ट घट' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(14) 'हर हरषि' में छेकानुप्रास अलंकार है।

[57]

हुरब रंग नव रत्त वर, भयौ जुद्ध अति चित्त।
निस बासुर समुझि न परत, न को हार नह जित्त।।

शब्दार्थ :-

हुरब=हुंकार, रत्त=लाल, वर=श्रेष्ठ, जुद्ध=युद्ध, अति=अत्याधिक, चित्त=उत्साह के साथ, निस=रात, बासुर=दिन, को=कोई, हार=हारता है, न=नहीं, जित्त=जीतता है।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि प थ्वीराज और शहाबुद्दीन गौरी की सेनाओं के बीच हुए भयंकर युद्ध का वर्णन करता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि उस भयंकर युद्ध के उत्साह के कारण श्रेष्ठ योद्धाओं ने मुख पर नए खून की लालिमा छा गई और उत्साह के कारण वे हुंकारने लगे। कहने का भाव है कि उत्तेजना के कारण योद्धाओं के मुख लाल हो गये थे और क्रोध के कारण वे जोर-जोर से गर्जने लगे। दोनों पक्षों के योद्धाओं ने उत्साहपूर्वक भयंकर युद्ध किया। यह युद्ध इतना भयंकर था कि उसके कारण यह पता नहीं चलता था कि रात है या दिन। अभिप्राय यह है कि रात और दिन का अन्तर भी दिखाई नहीं दे रहा था। उस भयंकर युद्ध में दोनों पक्षों में से न किसी की हार हो रही थी, न किसी की जीत। कवि के कहने का अभिप्राय है कि उस युद्ध में हार-जीत का न होने के कारण दोनों ओर की

सेनाएं लगातार युद्ध कर रही थीं। उनमें से कोई भी पीछे हटने को तैयार नहीं था जिस कारण युद्ध का परिणाम निकलना कठिन हो रहा था।

विशेष :-

(1) अनिर्णित युद्ध का वर्णन है अर्थात् इस युद्ध से किसी भी पक्ष को न विजय प्राप्त हो रही थी और न पराजय। फलतः दोनों पक्ष लगातार युद्ध करते रहते थे।

(2) 'निस बासुद समुझि न परत' इस पंक्ति का यह अर्थ हो सकता है कि युद्ध क्षेत्र में हाथी, घोड़ों और सेनाओं के इधर-उधर दौड़ने या लड़ने से इतनी धूल मिट्टी उड़ रही थी, जिसने ऊपर उठकर सारे आकाश को ढक लिया। फलतः सूर्य का प्रकाश प थ्वी पर पहुंचने में असफल था। सांध्यकालीन जैसा धुंधला वातावरण छा गया था। इसी कारण यह पता नहीं चलता था कि वहां दिन है या रात।

(3) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(4) वीर-रस का सुन्दर परिपाक है।

(5) दोहा छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(6) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(7) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(8) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(9) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(10) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(11) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

[58]

न को हार नह जित्त, रहेइ न रहहि सूरवर।
धर उप्पर भर परत, करत अति जुद्ध महाभर।।
कहीं कमंध कहीं मथ्थ, कहीं कर चरन अन्तरुचि।
कहीं कंध बहि तेग, कहीं सिर जुटित उर।।
कहीं दन्त मत्त हय धुर धुपरि, कुम्भ भ्रसुंह रुंड सब।
हिन्दवान रांन भय भांन मुष, गबहिय तेग चहुंवान जब।।

शब्दार्थ :-

रहेइ=रोकने पर भी, रहहि=रुकते, सूरवर=श्रेष्ठ वीर, धर=धरती, प थ्वी, उप्पर=ऊपर, भर=भर-योद्धा, परत=गिरते, जुद्ध=युद्ध, महाभर=बड़े-बड़े योद्धा, कहीं=कही, कमध=कमन्ध-सिर हीन धड़, मथ्य=माथा-मस्तक, कर=हाथ, अन्तसरि=अंतड़ियां=आंतें, कन्ध=कन्धा, बहि=चीर कर पार हो जाती, तेग=तलवार, जुट्ति=टकरा कर, फुट्टि=फट जाते, उर=हृदय, दन्त=हाथी, मत्त=मस्त, हय=घोड़े, धर=खुर, धुपरि=खोपड़ी, कुम्भ=हाथी का गण्ड-स्थल-मस्तक, भ्रसुडह=सूंड, भ शु=डण्डि, रुण्ड=धड़, हिन्दवान=हिन्दुओं के, रांन=राजा, भय=हुआ, भान=सूर्य, मुध=मुख, गहिय=पकड़ी।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से

उद्धृत हैं। इसमें पृथ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि उस स्थिति का चित्रण करता है जब पृथ्वीराज चौहान राजा विजय तथा राजा कुमोदमणि की सेनाओं को पराजित करके पद्मावती को साथ लेकर दिल्ली की ओर बढ़ रहे थे तो मार्ग में शहाबुद्दीन गौरी की विशाल सेना ने पृथ्वीराज को चारों ओर से घेर लिया और दोनों सेनाओं के बीच भयंकर युद्ध होने लगा।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि उस भयंकर युद्ध में न तो कोई हार रहा था और न कोई जीत रहा था, अर्थात् दोनों पक्षों में बराबर का युद्ध हो रहा था। दोनों ओर के वीर योद्धाओं में युद्ध लड़ने का इतना उत्साह समाया हुआ था कि वे रोकने पर भी रुक नहीं रहे थे। कहने का भाव यह है कि यदि उनके सेनापति उनको युद्ध लड़ने से रोकते तो भी वे किसी हालत में रुकने वाले नहीं थे बल्कि वे भयंकर मार-काट मचा रहे थे। युद्ध में घायल होकर वे योद्धा पृथ्वी पर गिर पड़ते थे। उधर महायोद्धा शत्रु के विरुद्ध अत्यन्त भयंकर युद्ध कर रहे थे। कहने का भाव यह है कि सामान्य योद्धा तो युद्ध में लड़ते लड़ते गिर पड़ते थे, लेकिन महान योद्धा शत्रु के विरुद्ध भयंकर युद्ध कर रहे थे। उस युद्ध क्षेत्र में कहीं योद्धाओं के धड़, कहीं सिर, कहीं हाथ, कहीं पैर और कहीं अंतड़ियां चारों तरफ बिखरी पड़ी थी, अर्थात् युद्ध क्षेत्र में यहां-वहां योद्धाओं के कटे हुए अंग बिखरे पड़े थे। कहीं तलवार कंधे को काटती हुई पार हो जाती थी और कहीं योद्धाओं के सिर आपस में टकराकर फूट जाते थे और कहीं तलवारों के वार के कारण योद्धाओं के वक्षः स्थल फट जाते थे। हस्ती सेना और अश्व सेना की मार-काट का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि उस भयंकर युद्ध क्षेत्र में कहीं तो हाथियों के टूटे हुए दांत पड़े थे, कहीं घोड़ों के तथा कहीं उनके सिर कटे पड़े थे। कहीं हाथियों के मस्तक, सूंड तथा धड़ कटकर बिखरे पड़े थे । इस प्रकार चारों ओर लाशों के ढेर लग गए थे। जब हिन्दू नरेश महाराज पृथ्वीराज चौहान ने हाथ में तलवार पकड़ी तो उनका मुख सूर्य के समान चमकने लग गया था। अर्थात् उनके मुख का तेज सूर्य के समान दिखाई दे रहा था। इस प्रकार युद्ध में भयंकर महाविनाश हो रहा था। साहस और शौर्य के प्रतीक पृथ्वीराज का मुखमण्डल सूर्य की भांति तेजवान है।

विशेष :-

(1) पृथ्वीराज और शहाबुद्दीन की सेनाओं के बीच हुए युद्ध का यथार्थपरक वर्णन है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) वीर, भयानक तथा वीभत्स रस का परिपाक है।

(4) कवित्त छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(9) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(11) :कहौं कमंध कहौ' में वृत्यानुप्राय अलंकार है।

(12) 'कहौं कंध', 'घुर घुपटि' में छेकानुप्रास अलंकार है।

[59]

गही तेग चहुंबान हिन्दवांन रानं।
गजं जुथ परि कोप केहरि समानं।।
करे रुण्ड मुण्ड करी कुम्भ फाटे।
बंर सूर सामन्त हुकि गर्ज भार।।

शब्दार्थ :-

तेंग=तलवार, गही=पकड़ना, चहुंवानं=चौहान, हिन्दवांन=हिन्दू, रानं=राजा, गंजजुथ=हाथियों का झुंड, परि=टूट पड़ा, कोप=क्रोध करके, केहरि=सिंह (शेर), करी=हाथी, रुण्ड=धड़, मुण्ड=सिर, कुम्भ=मस्तक, बरं=श्रेष्ठ, सूर=वीर, हुकि=हुंकार भरकर, गर्ज=गर्जने लगे, भार=भारी (भयानक)।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि हिन्दू नरेश महाराज प थ्वीराज चौहान की युद्ध वीरता का वर्णन करता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि हिन्दू नरेश महाराज प थ्वीराज ने हाथ में तलवार पकड़ी और वह हाथियों के झुण्ड पर क्रुद्ध हुए सिंह के समान टूट पड़े। कहने का भाव यह है कि शेर के समान उन्होंने शत्रुओं की सेना पर आक्रमण कर दिया। उन्होंने हाथियों के मस्तकों को काटकर धड़ और सिर अलग-अलग कर दिये अर्थात् कहीं रूण्ड पड़े और कहीं मुण्ड। यह देखकर प थ्वीराज के श्रेष्ठ योद्धा और सामन्त गरजते हुए हुंकारने लगे।

यहां पर एक अन्य अर्थ यह भी हो सकता है कि प थ्वीराज चौहान ने हाथियों पर सवार शत्रुओं के योद्धाओं के सिरों को काटकर अलग कर दिया जिसे देखकर उसके वीर योद्धा हुंकार करने लगे। इस प्रकार प थ्वीराज का साहस और शौर्य उसकी सेना के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन गया जिससे उसके सैनिकों में एक नई स्फूर्ति पैदा हो गई।

विशेष :-

(1) प थ्वीराज की युद्ध वीरता का सजीव वर्णन है।
(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।
(3) वीर तथा भयानक रस का सुन्दर प्रयोग है।
(4) भुजंगी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।
(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।
(6) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।
(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।
(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।
(9) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।
(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।
(11) 'गजं जूथ परि कोष केहरि समान' में उपमा अलंकार है।
(12) 'करी कुम्भ', 'सूर सामन्त' में छेकानुप्रास अलंकार है।

[60]

कीट चीह चिक्कार करि कलप भग्गे।
मंद तंजियं लाज उमंग मग्गे।।
दौरि गज अन्ध चहुआंन केरो।
घेरियं गिरद्दं चिहौं चक्क फेरी।।

शब्दार्थ :-

करी=हाथी, चीह चिक्कार=चिंघाड़ना (चीत्कार करना), करि=सूंड, कलप=कटी हुई, भग्गे=भागे, मंद=मद (हाथियों के मस्तक से बहने वाला गाढ़ा तरल पदार्थ जो सुगन्धित होता है, इसे 'मदस्राव' भी कहते हैं, सुगन्ध के कारण ही भ्रमर 'मदस्राव' पर मंडराते हैं।), तंजियं=तज कर, लाज=लार, उमंग=जोश, मग्गे=रास्ता, दौरि=दौड़कर, गज=हाथी, अन्ध=उन्मत, चहुंआंन=चौहान, केरो=का, घेरियं=घेर लिया, गिरद्दं=धूल, चिहौं=चारों, चक्क=चक्कर (दिशा), फेरो=फेरा लगाना।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि प थ्वीराज चौहान की वीरता का वर्णन करते हुए उस द श्य पर प्रकाश डालता है जब प थ्वीराज ने शहाबुद्दीन की सेना के हाथियों पर आक्रमण किया तो उनमें भगदड़ मच जाती है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि हिन्दू नरेश प थ्वीराज चौहान ने शहाबुद्दीन गौरी की सेना के हाथियों की सूंडों को काट दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि वे हाथी सूंड कट जाने के कारण चिंघाड़ते हुए भागने लगे। वे अपने मद को अर्थात् मस्ती को भूलकर लार टपकाते हुए अपनी जान बचाने के उत्साह में जहां कहीं भागने लगे। शत्रु सेना की यह स्थिति देखकर प थ्वीराज ने अपने हाथी को उकसाया और वह अन्धा (उन्मत्त) होकर उन हाथियों का पीछा करने लगा। फिर उसने उन हाथियों को चारों ओर से घेर लिया। हाथियों के भागने से वहां इतनी धूल उड़ी कि उसके कारण हाथियों को कुछ भी नजर नहीं आ रहा था और वे धूल के घेरे में ही चारों ओर चक्कर काटने लगे। कहने का भाव यह है कि शत्रु के हाथियों को निकल कर भागने का रास्ता नहीं मिला और वे वहीं पर चक्कर काटने लगे। इस प्रकार प थ्वीराज के पराक्रम के सामने शत्रुओं के हाथियों का बल भी क्षीण हो गया था।

विशेष :-

(1) युद्ध क्षेत्र में प थ्वीराज के पराक्रम के सामने मची हाथियों की भगदड़ का सजीव वर्णन है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) वीर-रस का सुन्दर परिपाक है।

(4) भुजंगी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(5) दूसरी पंक्ति में 'मद' शब्द बल और वीरता का प्रतीक है और 'लाट' शब्द हाथियों की कायरता की प्रतीक है। अर्थात् युद्ध से पहले तो शत्रुओं के हाथी अपनी ताकत के कारण मद बहाते रहते थे, पर प थ्वीराज के आक्रमण के बाद वे अपने मद को भूलकर लार टपकाने लगे।

(6) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(7) तद्‌भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(8) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(9) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(10) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(11) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(12) 'चीह चिक्कार', 'करि कलप', 'चिहौं चक्क' में छेकानुप्रास अलंकार है।

[61]

गिरदं उड़ी भांन अंधार रैनं।
गई सूधि सुझ्झै नहीं मझ्झिं नैनं।।
सिर नाय कम्मान प थिराज राजं।
पकरिये साहि जिम कलिंग बाजं।।

शब्दार्थ :-

गिरदं=धूल (गर्द), भानं=भानु (सूर्य), अंधार=अंधेरा, गई=मारी गई, सूधि=सुध (होश), सुझ्झै=दिखाई देना, मझ्झि=मध्य में, नैनं=नेत्र, नाय=डालकर, कम्मान=धनुष की डोरी, पकरिये=पकड़ लिया, साहि=बादशाह (गौरी), जिम=जैसे, कुलिंग=गौरया नामक पक्षी (चिड़िया), बाजं=बाज।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्‌मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्‌मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि उस द श्य का चित्रण करता है कि किस प्रकार प थ्वीराज चौहान ने वीरतापूर्वक शहाबुद्दीन गौरी को बन्दी बनाया।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि उस भयानक युद्ध में हाथियों की भगदड़ मचने से इतनी धूल उड़ी कि सूर्य छिप गया और चारों ओर रात्रि कालीन अंधेरा छा गया। ऐसा लगा रहा था कि मानो रात हो गई हो। चारों ओर फैले अंधकार के कारण योद्धा अपनी सुध-बुध खो बैठे थे, क्योंकि उन्हें कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। भाव यह है कि अन्धकार के कारण योद्धाओं को कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

कवि पुनः कहता है कि इस अवसर पर महाराज प थ्वीराज ने बादशाह शहाबुद्दीन की गर्दन में अपना धनुष फंसाकर उसे इस प्रकार पकड़ लिया जैसे बाज गौरया नामक पक्षी को छप्पटा मारकर पकड़ लेता है। कहने का भाव यह है कि प थ्वीराज ने गौरी की गर्दन में अपने धनुष की कमान को फंसा कर उसे पकड़ लिया। इस प्रकार गौरी बंदी बना लिया गया।

विशेष :-

(1) हिन्दू नरेश प थ्वीराज चौहान ने वीरतापूर्वक युद्ध कौशलता का परिचय देते हुए शहाबुद्दीन गौरी को कैद कर लिया है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) वीर-रस का सुन्दर परिपाक है।

(4) भुजंगी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(9) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(11) 'सूधि सुझझै' में छेकानुप्रास अलंकार है।

(12) 'पकरिये साहि जिम कुलिंग बाजं' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

[62]

लै चल्यौ सितावी करी फारि फौजं।
परे मीर सै पंच तहं चेत चौजं।।
रजंपुत्त पंचास जुझ्झै अमोरं।
बजै जीत के नद्द नीसांन घोरं।।

शब्दार्थ :-

लै चल्यौ=ले चला, सितावी=शीघ्र-तेजी से (यह फारसी के शितावी का बिगड़ा हुआ रूप है), करी=हाथी, फारि=चीरता हुआ, मीर=गौरी के सरदार, सै पंच=पांच सौ, षेत=युद्ध क्षेत्र, चौजं=चूजे (मुर्गी के बच्चे के समान), राजंपुत्त=राजपूत-क्षत्रिय योद्धा, पंचास=पचास, जुझ्झै=जुझते हुए मारे गए, अमोरं=अटल, नद्द=नाद (शब्द), नीसान=नगाड़ा, घोरं=भयानक।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'पथ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्धत हैं। इसमें पथ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि उस स्थिति का वर्णन करता है कि किस प्रकार पथ्वीराज ने गौरी को पकड़कर बंदी बना लिया और फिर उसे लेकर दिल्ली की ओर बढ़ने लगा।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि पथ्वीराज चौहान शहाबुद्दीन गौरी को बंदी बनाकर शत्रु सेना को चीरता हुआ बड़ी शीघ्रता से अपने हाथी को दिल्ली की ओर बढ़ाने लगा। उस युद्ध क्षेत्र में गौरी के पांच सौ सरदार इस प्रकार मरे पड़े थे जैसे मुर्गी के बच्चे (चूजे) मरे पड़े हों। इसके साथ-साथ युद्ध में पीठ न दिखाने वाले अर्थात् हारकर पीछे न मुड़ने वाले पचास राजदूत यौद्धा भी वीरगति को प्राप्त हो गये। यह देखकर जीत के नगाड़े बड़ी भयंकरता से बजने लगे।

विशेष :-

(1) पथ्वीराज चौहान की विजय के साथ युद्धक्षेत्र में हुई सैनिकों की हानि पर प्रकाश डाला गया है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) 'परे मीर सै पंच तहं चेत चौजं' में उपमा अलंकार है।

(4) भुजंगी छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(9) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(11) 'नद्द नीसांन' में छेकानुप्रास अलंकार है।

(12) 'परे मीर सै पंच तहं षेत चौजं' में उपमा अलंकार है।

टिप्पणी :-

कुछ आलोचक 'चौजं' का अर्थ 'चुने हुए' मानते हैं तब इसका अर्थ इस प्रकार होगा-शाहबुद्दीन के चुने हुए पांच सौ मीर युद्ध क्षेत्र में मरे पड़े थे।

[63]

जीत भई प्रथिराज की, पकरि साह लै संग।
दिल्ली दिसि मारगि लगौ, उतरि घाट गिरिगंग।।

शब्दार्थ :-

जीति=विजय, भई=हुई, पकरि=पकड़कर, शाह=बादशाह (शहाबुद्दीन), दिसि=दिशा, मारगि=मार्ग, लगौ=लगा, उतारे=उतरा, गिरिगंग=पर्वतीय गंगा।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्द्य त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का सुन्दर एवं सजीव वर्णन है। यहाँ कवि उस स्थिति का चित्रण करता है जब प थ्वीराज चौहान युद्ध क्षेत्र में विजय प्राप्त कर शहाबुद्दीन गौरी को कैद करके दिल्ली की तरफ बढ़ने लगता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि उस भयंकर युद्ध में प थ्वीराज की विजय हुई। उसने बादशाह गौरी को पकड़ कर कैद कर लिया और उसे अपने साथ लेकर वह पर्वतीय गंगा के घाट पर उतरा और फिर उसे पार करके दिल्ली की दिशा में जाने वाले रास्ते को पकड़ा, अर्थात् प थ्वीराज चौहान ने एक पर्वतीय क्षेत्र में गंगा नदी को पार किया और शहाबुद्दीन गौरी को साथ लेकर वह दिल्ली की तरफ बढ़ने लगा।

विशेष :-

(1) युद्ध में प थ्वीराज की विजय हुई और शहाबुद्दीन को बंदी बना लिया गया है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) दोहा छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(5) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(7) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(10) 'दिल्ली दिसि' में छेकानुप्रास अलंकार है।

[64]

वर गोरी पदमावती, गहि गोरी सुरतांन।
निकट नगर दिल्ली गाट, अत्रभुजा चहुंवान।।

शब्दार्थ :-

वर=वरण करना, गोरी=गौर वर्ण वाली, गहि=पकड़ कर, गोरी सुरतांन=बादशाह शहाबुद्दीन, निकट=समीप, अत्त भुजा=अष्ट भुजा (दुर्गा), चहुंवान=चौहान (पथ्वीराज)।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'पथ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्धत हैं। इसमें पथ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का सुन्दर वर्णन है। यहाँ कवि उस समय का वर्णन करता है जब पथ्वीराज चौहान शहाबुद्दीन गौरी को पकड़कर दिल्ली ले गए और सर्वप्रथम पद्मावती को दुर्गा मन्दिर ले गए।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि पथ्वीराज चौहान ने एक ओर तो गौरी वर्ण वाली पद्मावती का वरण किया और दूसरी ओर गजनी सुलतान शहाबुद्दीन गौरी को पकड़कर बंदी बना लिया। इस प्रकार पथ्वीराज दिल्ली पहुंचकर (सर्वप्रथम) अष्ट भुजा वाली दुर्गा माँ के मन्दिर में गये। इस प्रकार पथ्वीराज चौहान अपनी वंश परम्परा के अनुरूप अपने आराध्य देव या देवी के प्रति भक्ति भाव प्रकट करने के लिए मन्दिर जाते हैं।

विशेष :-

(1) विजय प्राप्त कर दिल्ली पहुंचने के उपरांत पथ्वीराज अपने महल में जाने की अपेक्षा सर्वप्रथम दुर्गा मां के मंदिर में जाते हैं।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) दोहा छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(5) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(7) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(10) 'गहि गौरी' में छेकानुप्रास अलंकार है।

टिप्पणी -

दूसरी पंक्तिमें 'अत्रभुजा' के स्थान पर 'चतुर्भुज' शब्द भी मिलता है जिसका अर्थ है - भगवान विष्णु या शिव। उन दिनों चतुर्भुज शिव की उपासना खूब होती थी। उस समय शिव मन्दिर प्रायः नगर के बाहर होते थे। अतः पाठभेद का अर्थ होगा-चतुर्भुज महादेव का मन्दिर। पुराने जमाने में भारतीय भक्ति भावना से जुड़ी यह प्रथा थी कि वर-वधु अपने घर में प्रवेश से पहले

नगर के बाहर स्थित भगवान की पूजा कर आशीर्वाद प्राप्त करते थे। इसलिए अपने वैवाहिक जीवन की मंगलकामना के लिए भी प थ्वीराज पद्मावती को साथ लेकर महल में जाने से पूर्व अष्टभुजा दुर्गा या चतुर्भुज महादेव के मंदिर में गए।

[65]

बोलि विप्र सोधे लगन, सुध घरी पर्राट्ठय।
हर बांसह महंट बनाय, कटि भांवरि गंठिय।।
ब्रह्म वेद उच्चरहिं, होम चौरी जु प्रति वर।
पदमावती दुलहिन अनूप, दुल्लह प्रथिराज नर।।
यौ साह साहावदी, अट्ट सहस हय बर सुबर।
दै दानं मानं षटभेष कौ, चढ़े राज दुग्गाह हुजर।।

शब्दार्थ :-

बोलि=बुलाकर, विप्र=ब्राह्मण, सोधे=लगन (विवाह का मुहूर्त निकाला अथवा ल ग्न शुरु किया), सुध=शुभ (पवित्र), घरी=घड़ी, परट्ठिय=प्रतिष्ठा की, हर=हरे, बांसह=बांस का, गंठिय=गांठ जोड़ना, महंट=मण्डप, भांवरि=फेरे लेना (एक ऐसी वैवाहिक विधि जिसमें वर-वधू वेदी के चारों ओर सात चक्कर लगाते हैं), ब्रह्म=ब्राह्मण, उच्चरहिं=उच्चारण करते हैं, चौरी=वेदी, जु=जहां, प्रति=प्राप्ति वर=पति, अनूप=अनुपम, नर=नर-श्रेष्ठ (वीर), डडयौ=दंड दिया, साहाबदी=शहाबुद्दीन, अट्ट=आठ, सहस=हजार, हय=घोड़े, बर=श्रेष्ठ, सुबर=सुन्दर, मानं=सम्मान, षट्भेष=छः प्रकार के वेश-भूषा वाले (अर्थात् पति, भोगी, संन्यासी, जंगम, चारण और ब्राह्मण), राज=दुग्गाह=राजमहल, हुजर=सामने।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का सुन्दर एवं सजीव वर्णन है। यहाँ कवि ने अष्टभुज माँ दुर्गा के मन्दिर में प थ्वीराज और पद्मावती के विवाह करने तथा गौरी को दंडित करने का वर्णन किया है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि प थ्वीराज ने ब्राह्मणों को बुलाकर उनसे विवाह का लगन (शुभ मुहूर्त) निकालने के लिए कहा। ब्राह्मणों ने भी अच्छी प्रकार से शोध करके अर्थात् भली प्रकार गणना करके विवाह का शुभ मुहूर्त निकाला। फिर वहाँ पर हरे बांसों का एक मण्डप सजाया गया, जहाँ पर प थ्वीराज और पद्मावती (वर-वधू) का ग्रंथि बंधन करके भांवरे डलवाकर दोनों का विवाह कर दिया गया। इस अवसर पर यज्ञ की वेदी के पास बैठे हुए ब्राह्मणों ने वेद-मन्त्रों का उच्चारण किया। उसी यज्ञ वेदी पर पद्मावती को प थ्वीराज के रूप में पति की प्राप्ति हुई। इस विवाह में पद्मावती अद्वितीय दुल्हिन थी और नर-श्रेष्ठ प थ्वीराज दूल्हा अर्थात् वर थे। इस प्रकार विवाह कार्य सम्पन्न होने के पश्चात् प थ्वीराज ने बंदी बनवाए गए सुलतान गौरी को दंडित किया। उसे आठ हजार श्रेष्ठ और सुन्दर घोड़े दण्ड के रूप में देने की आज्ञा दी। तत्पश्चात् राजा प थ्वीराज ने षट्ट भेषी ब्राह्मणों अर्थात् - यति, भोगी, संन्यासी, जंगम, चारण तथा ब्राह्मणों को दान देकर उन्हें सम्मानित किया और फिर वे सामने स्थित अपने राजमहल (दुर्ग) में चला गया अर्थात् पद्माती को साथ ले वह अपने राजमहल में प्रवेश कर गया। इस प्रकार प थ्वीराज और पद्मावती वैवाहिक सूत्र में बंधकर ग हस्थ जीवन में प्रवेश करते हैं।

विशेष :-

(1) प थ्वीराज की युद्ध वीरता, दानवीरता तथा क्षमावीरता का वर्णन है जैसे-युद्ध वीरता के द्वारा प थ्वीराज ने गौरी और उसकी सेना को पराजित किया, क्षमा वीरता के द्वारा उन्होंने उसे क्षमा किया और फिर षट्भेदी याचकों को दान देकर उन्हें सम्मानित किया।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) कवित्त छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(5) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(7) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

(10) 'साह साहाबदी' में छेकानुप्रास अलंकार है।

टिप्पणी -

प्रस्तुत छन्द में प्रयुक्त परट्ठिय, साहावदी, दुग्गह, हुजर इत्यादि शब्द काफी पुराने हैं। ऐसे शब्दों से रासो की प्रामाणिकता पर संदेह होता है, लेकिन अन्य तर्क यह भी दिया जाता है कि लाहौर विदेशियों के सम्पर्क में आ चुका था। इसलिए वहां की भाषा में अरबी, फारसी शब्दों का प्रयोग होने लगा था।

[66]

चढ़िय राज प्रथिराज, छाँड़ि साहाबदीन सुर।
त्रिपंत सूर सामन्त, बजत नीसांन गजत धुर।।
चन्दबदनि म गनयनि, कलस लै सिर सनमुष्ष जुष।
कनक धारं अति बनाय, मोतिन बंधाय सुध।।
मण्डल मयंक वर नार सब, आनन्द कण्ठह गाइयब।
ढोरन्त चंवर किंक्करहिं, मुकुट सीस तिक जु दियब।।

शब्दार्थ :-

चडिय=चढ़ गया (दुर्ग में प्रवेश कर गया), छाँड़ी=छोड़कर, सुर=यवन, म्लेच्छ, त्रिपत=त प्त, नीसांन=नगाड़े, गजत=गर्जते हैं (गूंजते हैं), धुर=पूरी शक्ति से, चन्द्रबदनि=चन्द्रमुखी, म गनयनि=हिरण के समान आंखों वाली, कलस=कलश (मटका), सनमुष्ष=सन्मुख-सामने, कनक=सोने का, धारं=थालों में, सुष=सुखपूर्वक, बंधाय=बांधकर, मण्डल=फेरा, मयंक=चन्द्रमा, वर=श्रेष्ठ, नार=स्त्रियों, कष्ठह=कण्ठ से, गाइयब=गाने लगी, ढोन्त=हिलाना-डुलाना, किंक्करहिं=नौकर, सीस=शीश, तिक=तिलक, दिय=दिया।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि राजदुर्ग में प थ्वीराज की विजय से उत्पन्न खुशी के वातावरण का चित्रण करता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि असुर शहाबुद्दीन गौरी को दण्डित करके, मुक्त करके स्वयं प थ्वीराज चौहान अपने दुर्ग में चढ़ गया अर्थात् वह अपने राजमहल में चला गया। अपने राजा की सभी कामनाओं को पूरा करता हुआ जानकर उसके सभी वीर सामन्त (योद्धा) पूर्णतया सन्तुष्ट हो गये, क्योंकि उन्होंने अपने शत्रु पर पूर्ण विजय प्राप्त कर ली थी। (खुशी के कारण) चारों ओर नगाड़ों की ध्वनि गूंजने लगी। चन्द्रमुखी एवं म गनयनी सुन्दरियां अपने सिरों पर जल से भरे हुए कलश लिए हुए राजा का स्वागत करने के लिए उसके सम्मुख आई। उन्होंने सर्वप्रथम स्वर्ण कालों को अच्छी प्रकार से सजाया और उनमें सुन्दर मोती भरे। जैसे चन्द्रमा को तारे चारों ओर से घेर कर सुशोभित करते हैं उसी प्रकार प थ्वीराज चौहान भी उन सुन्दर नारियों से चारों ओर से घिरा हुआ था और वे स्त्रियां अपने आनन्द भरे कण्ठों से मंगल गीत गा रही थीं। जब प थ्वीराज के सिर पर मुकुट रखकर उसके मस्तक पर तिलक लगाया गया तो सेवक (किकर) उन पर चंबर डुलाने लगे, अर्थात् राजा प थ्वीराज के सिर पर मुकुट रखा गया। उनको तिलक किया गया, क्योंकि वे पद्मावती को जीत कर लाए थे। इस प्रकार सम्पूर्ण राजदुर्ग में खुशी का वातावरण है तथा सभी नर-नारी अपने राजा प थ्वीराज का स्वागत करने के लिए तत्पर हैं।

विशेष :-

(1) प थ्वीराज की विजय और राजदुर्ग में उनके प्रवेश का प्रभावशाली वर्णन है।

(2) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(3) कवित्त छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(4) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(5) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(6) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(7) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(8) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(9) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

[67]

चढे राज दुग्गह त्रिपति, सुमत राज प्रथिराज।
अति अनन्द आनन्द सं, हिन्दुकंन सिरताज।।

शब्दार्थ :-

दुग्गह=दुर्ग पर, त्रिपति=राजा, सुमत=बुद्धिमान, अनन्द=आनन्दित होकर, आनन्द=प्रसन्नता, हिन्दुकंन=हिन्दू, सरताज=सरताज (शिरोमणि)।

प्रसंग :-

प्रस्तुत भावपूर्ण पंक्तियाँ चन्दबरदाई रचित 'प थ्वीराज रासो' के अन्तर्गत 'पद्मावती समय' से उद्‌ध त हैं। इसमें प थ्वीराज चौहान और पद्मावती के प्रेम तथा विवाह का मनोहारी वर्णन है। यहाँ कवि 'पद्मावती समय' खण्ड के अन्त में प थ्वीराज चौहान का गुणगान करता है।

व्याख्या :-

महाकवि चन्दबरदाई मनभावन चित्रण करता हुआ कहता है कि सुन्दर बुद्धि वाला महाराज

प थ्वीराज चौहान हिन्दुओं में शिरोमणी राजा है, अर्थात् वे हिन्दुओं के सर्वश्रेष्ठ राजा हैं। बड़े आनन्द और प्रसन्नता के साथ महाराज प थ्वीराज दुर्ग के ऊपर चढ़ गए, अर्थात् उन्होंने अपने किले में प्रवेश किया।

विशेष :-

(1) प थ्वीराज चौहान का गुणगान किया गया है।

(2) पद्मावती को प्राप्त करने तथा मलेच्छ बादशाह शहाबुद्दीन गौरी को पराजित करने के बाद प थ्वीराज आनन्दित एवं प्रसन्न ह्रदय से दुर्ग में प्रवेश करते हैं।

(3) डिंगल, पिंगल मिश्रित भाषा का आकर्षक रूप है।

(4) दोहा छन्द का सुन्दर प्रयोग है।

(5) भावों की मनमोहक अभिव्यंजना है।

(6) तद्भव शब्दों का बहुत आकर्षक प्रयोग है।

(7) भाषा सरल तथा बोधगम्य है।

(8) आकर्षक गेयता तथा लयात्मकता है।

(9) प्रसाद और ओजगुण सम्पन्न शैली है।

(10) मनमोहक भाव अभिव्यक्ति है।

टिप्पणी -

पहली पंक्ति में प्रयुक्त शब्द 'त्रिपति' का अर्थ है - राजा। आगे कवि ने 'राज प थिराज' शब्द का भी प्रयोग किया है जिससे पुनराव त्ति दोष उत्पन्न हो गया है, क्योंकि पहले उसे राजा कह दिया गया है तो पुनः राज शब्द अनुचित प्रतीत होता है, परन्तु छन्दपूर्ति के लिए यह क्षम्य है।